गाँव की ओर

अंक : 02 : अक्टूबर-दिसम्बर, 2019

पढ़ो..पढ़ो लाडलो ! जिससे हक़ के दो अक्षर बोलने के लिए अटकना न पड़े !!

चाइल्ड फण्ड इण्डिया कार्यक्रम अन्तर्गत मानिकपुर में स्पान्सर बच्चों की माताओं का स्वास्थ्य उपचार करती सुप्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ0 राजश्री (कोटा, राजस्थान)।

स्पान्सर बच्चों के परिवारों को उद्यमिता विकास हेतु सहयोग प्रदान करते हुए निदेशक श्री राष्ट्रदीप, आजीविका समन्वयक श्री देशराज एवं सह शिक्षा समन्वयक श्री गौरीशंकर।

स्पान्सर बच्चों का स्वास्थ्य उपचार करते शिशु एवं बाल रोग विशेषज्ञ डॉ0 राकेश अग्रवाल (सतना, म0प्र0)।

बरगढ़, मऊ में युवाओं को श्रम कानून सम्बन्धी प्रशिक्षण देते हुए क्षेत्रीय शिक्षा समन्वयक श्री गजेन्द्र सिंह ।

गीत-संगीत के माध्यम से बच्चों एवं उनके अभिभावकों को शिक्षा के प्रति जागरूक करते श्री सुखराम एवं साथी कलाकार।

शिक्षा संस्कार केन्द्र में योग शिक्षा ग्रहण करते हुए छात्र एवं छात्राएं।

गाँव की ओर

।। निःशुल्क सीमित वितरण हेतु ।।

अंक : 02 : अक्टूबर-दिसम्बर, 2019

●

प्रधान सम्पादक

राष्ट्रदीप

अर्चन

●

प्रबन्ध सम्पादक

आशीष कुमार

●

सम्पादक

गजेन्द्र

●

सम्पादक मण्डल

पूनम गुप्ता, रीना सिंह,

विश्वदीप, जयगोपाल

भारती

●

शब्दांकन/साज-सज्जा

कुमार अरबिन्द

बृजेन्द्र कुमार

●

सम्पादकीय कार्यालय

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान

भारत जननी परिसर, रानीपुर भट्ट, सीतापुर

जिला–चित्रकूट (उ0प्र0) 210204

दूरभाष : 9415310660, 7054566040

E-mail : absssckt@gmail.com, bssscso@gmail.com,

Website : absss.in

इस अंक में

हमारे विद्यालय में यह नहीं चलेगा....	साभार : गिजुभाई ग्रन्थ माला-१०	२
अपनी बात	राष्ट्रदीप	३
चित्रकूट चिन्तन	गोपाल भाई	४
माँ मन्दाकिनी की पीड़ा	रीना सिंह 'रश्मि'	५
मन्दाकिनी मार्ग के कुछ महत्वपूर्ण पहलू	गजेन्द्र सिंह	५-७
महिला विकास का माहैल कैसे बने	भारत डोगरा	८
इन आँखों की अजब कहानी	अर्चन	९
आकार ले रहे बच्चों को शिक्षित, संस्कारित करने के सधन प्रयास	विद्यासागर बाजपेई	१०-११
बच्चों की जुबानी गाँव की राम कहानी	अन्तिमा	१२
विकास ने क़दम नहीं रखा गांव में	संजना	१२-१३
बहुत बदहाल है गांव	प्रीती	१३
जंगली जानवरों से हलाकान है ऊँचाडीह		१३
रमपुरिया	शिवमंगल	१४
बच्चों के बेपरवाह पालकों को सुधारती है भारती	अर्चन	१५
अर्चन के कुछ फागुनी दोहे	अर्चन	१६
छेड़ देती हैं बूटी जब, कोयल जैसी तान ...	अर्चन	१७
किस्सा पागदिलपुर	राजाबुआ	१८
बड़ाहार का हाल बुरा है	आशीष कुमार	१८
जनकवि कैलाश गौतम को याद करते हुए..	अर्चन	१९-२०
संस्थान की प्रशंसा को मिला 'जल-प्रहरी' सम्मान		२०
विश्व का सबसे अनोखा मुक़दमा	अर्चन	२१
मेरा नाम डेजी है...	रोहिणी देवी	२२
आदिवासी तिजिया ने बदली पति की आदतें...	अखिलेश कुमार	२३
बंधक पिता को छुड़ा ही लिया ९वीं पास पूजा ने	अनुजा यागिक	२४-२५
मजदूर बना व्यवसायी	मोहित सिंह	२५
प्रवासी भारतीयों के सहयोग से सँवर रहे पाठा के नौनिहाल	विश्वदीप	२६
कोई तो बताए...दर-ब-दर मुंगलू बसोर.....	शफ़ाक़	२७
स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति जागरुक होती किशोरियाँ	पूनम थामस	२८
६५ वर्षीय दादी ने तीन बच्चों को पढ़ाने का बीड़ा उठाया	अंकिता सिंह	२९
हर्र खाय बैशाख जो, बल विद्या अधिकाय...	शिवमंगल बाबा	३०
महुई में हुए जल संचयन के अनूठे प्रयास	सदाशिव	३१
सा'ब, बच्चों को सँभाल रहा था	साभार : गिजुभाई ग्रंथ	३२

हमारे विद्यालय में यह नहीं चलेगा....

♦ हमारे विद्यालय में शिक्षाशास्त्र सम्बन्धी पुस्तकों का विशाल पुस्तकालय नहीं होगा तो चलेगा, परन्तु माँग-ताँग करके भी अगर शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों से कोई अध्ययन नहीं करेगा तो यह नहीं चलेगा।

♦ हमारे विद्यालय का भवन आलीशान पत्थरों का बना या टाइलों जडा न हो तो चलेगा, परन्तु अगर उसकी जमीन में खडे पडे हुए होंगे या वह गोबर-गारे से लिपा-पुता नहीं होगा, तो यह नहीं चलेगा।

♦ हमारे विद्यालय की दीवारे रंग-रोगन की हुई और सुन्दर नहीं होगी तो चलेगा, परन्तु अगर उन पर एक भी जाला होगा या धूल चिपकी हुई होगी तो यह नहीं चलेगा।

♦ हमारे विद्यालय में अच्छे दरी-कालीन बिछे हुए नहीं होंगे तो चलेगा, परन्तु अगर कहीं भी थोडा-बहुत कचरा या धूल बिखरी होगी और वह पैरों में आती होगी, तो यह नहीं चलेगा।

♦ हमारे विद्यालय में शिक्षण के ढेर सारे उपकरण नहीं होंगे तो चलेगा, परन्तु अगर वहाँ थोडे से भी उपकरण हों और वे बिल्कुल काम में नहीं आए, तो यह नहीं चलेगा।

♦ हमारे विद्यालय में हम बडे भारी पंडित न हों तो चलेगा, परन्तु अगर बालकों को सम्मान देने वाले, उनके विकास का अर्थ समझकर उन्हें उत्तम वातावरण देने वाले नहीं होंगे, तो यह नहीं चलेगा।

♦ हमारे विद्यालय में बच्चे दो पल पढेंगे और दो पल खेलेंगे तो यह चलेगा, परन्तु अगर बच्चे कारखानों के मजदूरों की तरह दिनभर काम करते ही रहेंगे और हम लोग उन पर सख्त नजर किये रखेंगे, तो यह नहीं चलेगा।

♦ हमारे विद्यालय के बालक हमारे गले में आकर न झूमते हों और मित्र बनकर आगे न चलते हों तो चलेगा, परन्तु अगर वे हमें देखकर दूर-दूर भागते हों, हमसे डरते हों, तो यह नहीं चलेगा।

♦ हमारे विद्यालय में बच्चे कम पढेंगे तो चलेगा, धीमे-धीमे पढेंगे तब भी चलेगा, परन्तु अगर वे चीख-चीख कर पढते-पढते उकता जाएँ और शिथिल हो जाएँ, तो यह नहीं चलेगा।

- गिजुभाई

साभार : गिजुभाई ग्रन्थ माला-१०

अपनी बात

चित्रकूट के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र पाठा अर्थात मानिकपुर में वर्ष १९७८ में अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की बुनियाद के साथ ही आदिवासी समुदाय के बच्चों की बुनियादी शिक्षा कार्यक्रमों की भी बुनियाद रखी गई। संस्थान की स्थापना के पहले ही वर्ष यहाँ के अति पिछड़े दर्जनों गांवों में आदिवासी बच्चों के लिए शिक्षा-संस्कार केन्द्रों की स्थापना की गई। चार दशक के लंबे कालखंड के बाद आज यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि संस्थान प्राथमिक शिक्षा जैसे जरूरी कार्य को वर्तमान में भी गति दे रहा है। यह देखकर कर भी खुशी होती है कि दशकों पूर्व जिन आदिवासी बच्चों को संस्थान ने शिक्षा-संस्कार से जोड़ा था वे बड़े होकर, पढ़-लिखकर आज शोषित, वंचित समाज को जागृत कर रहे हैं। अपनी बस्तियों की 'नयी पौध' को गुण-ज्ञान से अभिसिंचित कर रहे हैं। कई नौजवान युवक-युवतियाँ संस्थान के साथ जुड़कर शिक्षा-संस्कार केंद्रों के संचालन की जिम्मेदारी बड़ी कुशलतापूर्वक निभा रहे हैं।

यह संस्थान के दूर-दृष्टिपूर्ण विजन और अनवरत मिशन की उपलब्धि है, संस्थान संस्थापक पूज्य श्री गोपाल भाई जी, कीर्तिशेष पूर्व निदेशक श्री भागवत प्रसाद जी और उनके सह-अस्तित्व, सहधर्मी, सहकर्मी महानुभावों, प्रियजनों और स्वजनों के अहर्निश योगदान का प्रतिफल है।

इधर संस्थान के प्रयासों को गति देने के लिए 'चाइल्ड फंड इंडिया', 'उत्तर प्रदेश मंडल ऑफ अमेरिका' जैसे दानदाता संगठन साथ हैं। जिनके सहयोग से ग़रीब आदिवासी समुदाय के बच्चों को शिक्षित-संस्कारित करने की महत्वपूर्ण पद्धतियों को अपनाया जा रहा है। बच्चों के शैक्षिक विकास के लिए बेहतर वातावरण तैयार किया जा रहा है। बाल अभुदय केन्द्रों एवं शिक्षा- संस्कार केंद्रों के माध्यम से एक ओर जहाँ बच्चों को पाठशालाओं से जोड़ा जा रहा है, उनमें लिखने पढ़ने की रुचियाँ पैदा की जा रहीं हैं वहीं दूसरी ओर उनके अभावग्रस्त परिवारों की स्थायी आजीविका के लिए भी हरसंभव प्रयत्न किए जा रहे हैं।

कालांतर में ग़रीब, शोषित, अशिक्षित समुदाय के अभिभावकों में बच्चों को पढ़ाने की ललक तो बढ़ी है लेकिन रोज़ी-रोटी के संकट के चलते वे नौनिहालों को नियमित पाठशालाओं से नहीं जोड़ पाते, विडम्बना बड़ी है, बच्चों के परिवारों की स्थायी आजीविका के लिए बड़े उपायों की जरूरत है। विश्वास है इस दिशा में कुछ और संगठन साथ देंगे।

'गाँव की ओर' के प्रस्तुत अंक में संस्थान के कतिपय प्रयासों का भी उल्लेख झलकेगा, जिन्हें गहन, व्यस्ततम कार्यों में लगे संस्थान के कर्मठ साथियों ने इस भरोसे से लिखा है कि उनकी सामाजिक बेचैनी के साथ आप सबका रचनात्मक भी सहयोग अवश्य जुड़ेगा।

चित्रकूट चिन्तन

गोपाल भाई
संस्थापक
अ०भा०समाज सेवा संस्थान

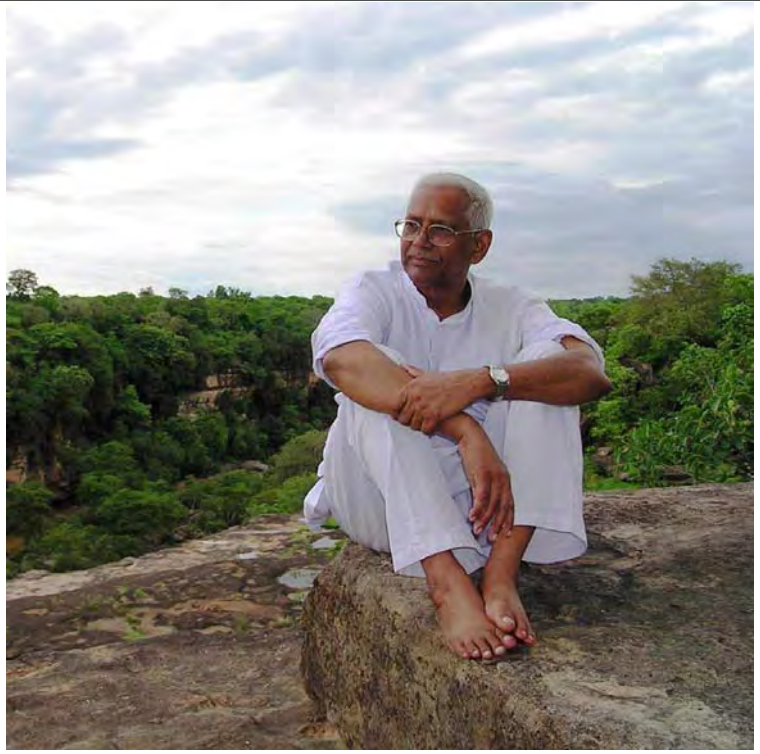

- मन्दाकिनी साफ-सफाई अच्छा कार्य है, होना ही चाहिए। ऐसे सभी सुजन वंदनीय हैं।
- मन्दाकिनी, जंगल के असंख्य, अबाध गति से धरती की कोख से निकलने वाले झरनों की देन है। चित्रकूट की प्राणाधार है।
- झरने विलुप्त हो रहे हैं। मन्दाकिनी में संकट है। संकट पैदा करने वाले उसके अपने ही सपूत हैं।
- मन्दाकिनी के संकट का समाधान, भ्रमित मानव की प्यास का हल ''झरनों का फिर से फूटना होगा।''
- झरने क्यों बन्द हो रहे हैं ? क्योंकि जंगल में अब जल जमा नहीं हो रहा, धरती में समाकर उसकी कोख को नहीं भर पा रहा है। ऐसा क्यों? समाधान खोजना होगा। वनानुरागियों की आज जरूरत है।
- धीरे-धीरे जंगल, भयंकर कटान के कारण अपनी उपादेयता खो रहे हैं। इस कलंक कालिमा को मिटाना ही होगा।
- जंगल की वृक्ष सम्पदा पर्यावरण को लोकमंगल हेतु प्रभावी नहीं बना पा रही है। सघन वन बनाना होगा।
- वृक्षारोपण अभियान, काम के वृक्षों का रोपण सुचिन्तित, सुनियोजित नहीं है।
- वन क्षेत्र का पानी, वहाँ ही रोका जाना चाहिए। वन विभाग जल संचयन का भी कार्य अभियान के रूप में करे।
- जलाच्छादन (वाटरशेड) का कार्य धरती के चप्पे-चप्पे पर होना चाहिए। अब तक जो हुआ है, अच्छा है, पर्याप्त नहीं।
- पं० दीनदयाल उपाध्याय का चिन्तन ''गाँव का पानी गाँव में, खेत का पानी खेत में'' कार्य व्यवहार में लाना होगा।
- पठार के ऊपर जल-जमाव होगा तभी नीचे झरने फूटेंगे। झरने फूटेंगे, मन्दाकिनी की गोद भरेगी। जन समस्याओं का जल विषयक समाधान होगा। अप्राकृतिक स्वलाभकारी सौंदर्य वृद्धि के साथ सुचिन्तित योजना पर भी ध्यान चाहिए।
- जंगल के अन्दर के नालों से बाहर बहकर जाने वाले पानी को रोकना होगा। पक्के ढाँचे बनाने की आवश्यकता नहीं अपितु बड़े-छोटे पत्थरों का अवरोध खड़ा करना होगा। पानी दौड़ की गति धीमी होगी। धरती के अन्दर जल जायेगा। ऐसी बहुत सारी विधियाँ हो सकती हैं। पहल कौन करे? नेतृत्व के पास निःस्वार्थ रचनात्मकता चाहिए।
- युद्ध स्तर पर बड़े अभियान के रूप में पौधरोपण का कार्य। पौधों में बरगद, पीपल, महुआ, पाकर, आँवला, बेल, नीम, गूलर, जैसों को वरीयता देनी पड़ेगी। पौध रोपण अभियान में ईमान का बलिदान बंद होना चाहिए।
- जल स्रोतों को रोकने वाले कार्यों को रोकना ही होगा। इसके लिए व्यवस्था को कठोर होना होगा।
- मन्दाकिनी किनारे के दोनो ओर यदि जंगल है तो उसे बचाना, समृद्ध करना होगा।

आइए, चलिए.....कदम उठाइए।...देखें कौन सुमन शैया तज कण्टक पथ पर आता है।

माँ मन्दाकिनी की पीड़ा

● रीना सिंह 'रश्मि'
पैरवी पैरोकार, समन्वयक, अर्श कार्यक्रम

मन्द-मन्द अब सिसक रही, माँ मोक्षदायिनी पग-पग में
क्रन्दन करुण सुनो माँ का, क्या रक्त नहीं बहता रग में।

दिव्य ज्ञान की दिव्य शक्तियों का, अटूट आधार रही,
खग, मृग, शेर, बाघ, बानर, सबकी तुम प्राणाधार रही।
तेरी गोद में मर्यादा पुरुषोत्तम, दशरथ नन्द रहे,
जब प्यार दुलार अपार मिला, तब ग्यारह बरस आनन्द रहे।।

युगों-युगों से जिन्दा है, करुणा बरसाती है जग में।

पावन प्रीति पुनीत हाँथ, माँ सदा सन्त सिद्धि में रहे,
तब त्याग साधना कर्मपूर्ण, धरती में सदा समृद्धि रहे।
माँ ममता का सागर है, जो भरा हुआ है अति अकूट,
विश्व धरा में विश्व चेतना, केन्द्र बना है चित्रकूट।।

ममता की बूँदे सींच रही, सदियों से आगत-स्वागत में।

भौतिक भ्रमित भव्यता में, तुम भूल सभ्यता जाते हो,
गोदी में मलमूत्र बहाकर, क्यों इतना इतराते हो।
अस्थि विसर्जन छौर कर्म के, केश कुशा उतराते हैं,
जहरीले घाव गुबारों के, अब माँ को बहुत रुलाते हैं।।

चिर तम चिराग चीरेगा कब, माँ आश लिए बैठी तट में।

माँ को अगर मारने को, सबने ठाना तो क्या ग़म है,
मरे हुए पर नहीं सुनो, घावों पर लगते मरहम हैं।
क्रिकेट खेलने का अड्डा, जब रामघाट बन जायेगा,
तेरा वैभव किसी काम का, तनिक नहीं रह जायेगा।।

प्रलय भयंकर देखेगा, तब आयेगी माँ चिन्तन में।

जननी जगत जानकी जी, श्रीराम अगर घट-घट में हैं,
स्वर्णिम भविष्य फिर चित्रकूट का, क्यों इतने संकट में हैं।
ढोंग रचा आडम्बर कर, जो आस्थाओं से खेल रहे,
मन्दाकिनी माँ के दुष्कर्मी को, सीधे फाँसी जेल रहे।।

दुष्कर्मी को दुष्कर्मी कहने, का संकोच न हो मन में
क्रन्दन करुण....

मन्दाकिनी मार्ग के कुछ महत्वपूर्ण पहलू

संस्थापक श्री गोपाल भाई की प्रेरणा पर संस्थान की २६ सदस्यी टीम ने गहन भ्रमण कर किया अध्ययन

गजेन्द्रपाल सिंह,
क्षेत्रीय शिक्षा समन्वयक
चाइल्डफण्ड कार्यक्रम

● ब्रह्मकुंड से निकलती है मन्दाकिनी की पहली जलधारा। यह उद्गम स्थल की जलधारा मध्यप्रदेश के सतना जिले के किल्हौरा गाँव में पड़ता है। इसकी धारा कोलों, बहेलियों आदि की शहीद भूमि पिड़रा गाँव से होते हुए ३० किमी० की दूरी तय कर त्रिवेणी नामक स्थान पर निकलती है। यहीं पर तीन नदियों का विशाल संगम होता है। इसमें कुसमी पहाड़ से बहने वाली निर्गुनिया नदी और सरभंग ऋषि के आश्रम के हवनकुंड से निकलने वाली सरभंगा नदी आकर मिलती हैं। इस स्थान को पाठावासी त्रिवेणी नाम से पुकारते हैं। जहाँ पर आदिवासियों का मकर संक्रान्ति पर तीन दिनों का विशाल मेला लगता है। इस मेले पर उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश के आदिवासी इकट्ठा होते हैं। यह मेला लगातार तीन दिनों तक चलता है। यहाँ पर दोनों राज्यों के आदिवासी जहाँ अपने नात, रिश्तेदार एवं सगे-सम्बन्धियों से मिलते हैं वहीं अपनी पुरानी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए ये आदिवासी अपने नये सम्बन्धों को भी जोड़ते हैं। मेले में ही हर आदिवासी अपने बेटे-बेटियों के लिए वर-वधू की खोज कर लेते हैं। यहीं लड़का-लड़की देखकर शादी की तिथि भी तय कर ली जाती है। मन्दाकिनी अपनी अलौकिक छटा समेटे हुए अपनी विशाल जलधारा के साथ शबरी प्रपात में आकर

गिरती है। यहाँ पर जलधारा के निरन्तर गिरने से दो विशाल कुण्ड बन जाते हैं। पहले कुण्ड में इसकी जलधारा लगभग अस्सी फीट की ऊँचाई से गिरती है जबकि दूसरी जलधारा पहले कुण्ड से महज १०० फीट की दूरी लेकर १२० फीट की ऊँचाई से गिरती है और दोनो कुण्डों के हिसाब से २०० फीट नीचे जाकर बहने लगती है। भारी कटाव होने के कारण दोनों तरफ लगभग १५ किमी० तक पहाड़ों की विशाल अरी खड़ी हो जाती है। जिनसे लगातार जनवरी माह तक पानी भिन्न-भिन्न स्थानों पर झरता रहता है। इसके बाद ऊपरी सतह का पानी समाप्त होते ही ये झरने बन्द हो जाते हैं। जल की यह धारा २० किमी० तक बहती हुई अत्रि मुनि की तपोस्थली अनुसुइया धाम से गुजरती है। जहाँ से यह निरन्तर बारहों महीने बहती रहती है। मान्यता अनुसार यहीं पर माँ अनुसुइया ने अपने तपोबल से मन्दाकिनी की जलधारा प्रवाहित की थी। जो आज भी अनवरत बह रही है। अनुसुइया के ऊपर मन्दाकिनी गर्मी के समय सूख जाती है। लेकिन अनुसुइया में यह लगातार बहती रहती है। अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के एक दर्जन से अधिक कार्यकर्ताओं ने दो दिवसीय पदयात्रा कर मन्दाकिनी मार्ग का अध्ययन किया। यह यात्रा शबरी प्रपात के लगभग २०० फीट नीचे नदी की तलहटी में उतरने के बाद हुआ था। दुर्भाग्य से यहां क्रूरतापूर्ण छेड़-छाड़ के कारण पूर्व जैसी सुखद स्थिति नहीं है नदी में पहाड़ के किनारे-किनारे या नदी के किनारे-किनारे ही यात्रा की जा सकती है। पहाड़ के किनारे जाने पर अरी की कटानों में मधुमक्खियों के बड़े-बड़े छत्ते लगे हैं। बीच-बीच में बड़ी-बड़ी गुफाएं हैं जहाँ पर हजारों साल पुराने शैलचित्र बने हैं। जिन्हें गुफाओं के नीचे खड़ा होकर देखा जा सकता है। इन शैलचित्रों का रंग काफी गाढ़ा और चटख है। स्थानीय लोग इन शैलचित्रों को अपनी-अपनी भाषा में अलग-अलग नाम से पुकारते हैं। पहले शैलचित्र को ये चुड़ैल अरी, दूसरे को डोला अरी बोलते हैं। पहले चित्र में कुछ महिलाओं के नृत्य मुद्रा में चित्र बने हैं। दूसरे चित्र में एक डोला लिये कहार के चित्र अंकित हैं। उन्ही के ठीक सामने एक चौकीदार की मुद्रा में सैनिक खड़ा हुआ दिखाई देता है। यह शैलचित्र शबरी प्रपात से लगभग १२०० मीटर की दूरी पर बने हैं। लेकिन अरी पर चढकर देखना मुश्किल है। शैलचित्रों तक पहुँचने के लिए पेड़ों को पकड़कर चढ़ना पड़ता है। इसके बाद भी वह चित्र काफी ऊँचाई में लटकी हुई चट्टानों में बनाये गये हैं दोनों तरफ ऊँची-ऊँची अरी की चट्टानों में मधुमक्खियों के बड़े-बड़े असंख्य छत्ते लगे हैं। जिससे उनसे बचने के लिए बहुत सावधानी रखनी पड़ती है। थोड़ी भी चूक हमें भारी संकट में डाल सकती है क्योंकि इनके हमले के बाद भागना बहुत मुश्किल हो जायगा। दोनों तरफ ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ हैं जिधर से सीधा चढ़ना असम्भव है। भागकर यदि गुफाओं में भी घुसे तो वहाँ जंगली हिंसक पशुओं के हमले का भय है। मन्दाकिनी

के दोनों तरफ भालू काफी तादाद में अपना रिहायशी स्थल बनाये हुए हैं। यहाँ से ऊपर चढ़ने के लिए केवल नाले ही एक मात्र सहारा हैं। जो ऊपर से आकर मन्दाकिनी में मिलते हैं। इसके अलावा अन्य कोई मार्ग नहीं है। इन नालों को उमरिहा, कोईलहा, दर्रा, पिंजरा, पनघटवा, ठर्री, गौघाट, कुड़िया, बगदरहा, भुनगुटहा, अमरावती, ददरी, माड़व आदि बोलते हैं। जिनसे होकर ऊपर चढ़ा जा सकता है। इन नालों या दर्रों के अलावा अन्य कोई मार्ग नहीं है। ये नाले जहाँ भी मन्दाकिनी को निरन्तर अविरल बहते रहने में सहायक हैं वहीं पशु-पक्षियों एवं जंगली जानवरों के आने-जाने के मार्ग भी हैं। गर्मियों में जब पानी कहीं नहीं मिलता तो हर प्यासा जानवर मानव इन्हीं रास्तों से आकर अपनी प्यास बुझाते हैं।

पाठा में यहाँ से ज्यादा अच्छा सुन्दर परिवेश एवं शुद्ध पर्यावरण कहीं नहीं मिल सकता। मन्दाकिनी में गिरने वाले नालों में ऊपर यदि छोटे-छोटे तालाब श्रृंखलाबद्ध श्रेणी में बना दिये जायें तो इस क्षेत्र की हरियाली हमेशा बनी रह सकती है। भूगर्भ के जलस्तर में बढ़ोत्तरी हो सकती है। पानी का संकट दूर हो सकता है। मन्दाकिनी में मौजूद उमरिहा, बुढवा, पटपरियन, रतौढ़ा, सेमरिहा, बगरहा कुण्ड, कटिहाई, अरवरिया, बेलकुण्ड़ा, करतोलवा, बिसुन्धा आदि दहारें गर्मियों में भी पानी से लबालब भरी रह सकती है। मन्दाकिनी यहाँ से भी अविरल बह सकती है। चुड़ैल अरी, डोला अरी, फटही अरी, रतौंढ़ा अरी, कछार अरी, बाघिन अरी, के बन्द हो चुके झरने भी पुनः जीवित हो उठेंगे। लेकिन इस पर कोई योजना बनाते समय मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के वन विभाग को एक साथ बैठना होगा। भविष्य में मन्दाकिनी को अपना अस्तित्व निरन्तर बनाये रखने के लिए इसमें दोनों राज्यों को गंभीरतापूर्वक विचार कर काम करना होगा। नहीं तो भविष्य में यह नदी अपने अस्तित्व को खो देगी। पाठा की जीवनदायिनी को क्या हम खोने देंगे। इसके अस्तित्व में संकट आते ही हमारी अपार वनसंपदा, पशु-पक्षी और कीट पतंग, जडी-बूटियाँ सब की सब नष्ट हो जायेंगी। शान्ति और सुकून के लिए कोई जगह ढूंढ़े नहीं मिलेगी। पानी का भयंकर संकट खड़ा हो जायेगा। जलस्तर को नापने के लिए रस्सी छोटी पड़ जायेगी। फसलों का उत्पादन ही समाप्त हो जायगा। अभी तो हम जाने अनजाने इसके द्वारा भूगर्भ में बने जलस्तर को किसी न किसी रूप में खींचकर फसल उत्पादन कर अपना पेट भर रहे हैं लेकिन हमारे बाद हमारी ही पीढ़ी हमें क्या कहेगी यह हम सबके लिए अति चिन्तनीय विषय बनना चाहिए।

मंदाकिनी तट का भ्रमण करती संस्थान टीम

महिला विकास का माहौल कैसे बने?

भारत डोगरा
सामाजिक कार्यकर्ता
सुप्रसिद्ध स्वतंत्र पत्रकार,
नई दिल्ली

● महिलाओं की अर्थव्यवस्था व समाज में व्यापक भागेदारी की बात तो बहुत की जाती है, पर इसके लिए जरूरी क़दम उठाए जाएं तभी जमीनी स्तर पर बदलाव नज़र आएगा। इस कार्य को दो स्तरों पर आगे बढ़ाना जरूरी है।

पहला स्तर सामाजिक व्यवहार का है यानि परिवार व विशेषकर पुरुषों के स्तर पर महिलाओं की भूमिका के प्रति दृष्टिकोण का है। विभिन्न अध्ययनों से यह स्थिति और स्पष्ट हुई है कि जब तक घर-गृहस्थी और देखरेख के कार्यों में पुरुष महिलाओं का अधिक साथ न दें तब तक महिलाओं पर इस कार्य का अत्यधिक बोझ बना रहेगा व उन्हें शिक्षा, प्रशिक्षण व विकास के समुचित अवसर नहीं मिलेंगे। इन अवसरों के अभाव में अधिकांश महिलाएं या तो अर्थव्यवस्था व समाज में व्यापक भूमिका के लिए आगे आ नहीं सकेंगी, अथवा उनको अर्थव्यवस्था में बहुत निम्न स्तर पर कम आय व बहुत सीमित रचनात्मकता के अवसर ही मिल पाएंगे। इस स्थिति में अनेक प्रतिभाशाली महिलाओं व लड़कियों की रचनात्मकता व व्यापक क्षमताओं को निखरने का अनुकूल अवसर नहीं मिलेगा और इस तरह पूरे समाज व अर्थव्यवस्था की व्यापक क्षति होगी। दूसरी ओर यदि इस लक्ष्य को एक सामाजिक अभियान की तरह अपनाया जाए कि देखरेख व घर-गृहस्थी की जिम्मेदारियों में महिलाओं व लड़कियों का साथ पुरुष व लड़के जितना उनकी स्थितियों में संभव हो उतना अवश्य देंगे तो इसमे न केवल महिलाओं व लड़कियों का बोझ कम होगा अपितु उन्हें व्यापक कार्यों से जुड़ी अपनी प्रतिभाओं और क्षमताओं को विकसित करने का बेहतर अवसर मिलेगा। इतना ही नहीं, जब गृहस्थी देखरेख के कार्यों से अधिक जुड़ेंगे तो उनके बहुपक्षीय व्यक्तित्व के कुछ उपेक्षित पक्षों को विकसित होने का अवसर भी मिलेगा।

दूसरा स्तर सरकारी नीतियों व कार्यक्रमों का है। यदि सरकारें उन नीतियों और कार्यक्रमों को अधिक असरदार ढंग से कार्यान्वित करें जिनसे महिलाओं को घर-गृहस्थी व देखरेख के अधिक बोझ से राहत मिलती है तो महिलाओं व लड़कियों को अपनी प्रतिभाओं का विकास करने, शिक्षा व प्रशिक्षण के लिए अधिक समय मिलेगा। यदि साफ पेयजल की उपलब्धि बहुत आसान व घर में या घर के पास सुनिश्चित हो जाए तो इससे महिलाओं व लड़कियों की प्रतिदिन समय व श्रम की बचत होगी, उनका दैनिक तनाव और थकान कम होगा तथा अपनी क्षमताओं के विकास के लिए अधिक समय व अवसर उन्हें मिलेंगे। इसी तरह यदि गाँवों में व गाँवों के पास वनीकरण व वृक्षारोण से चारे व ईंधन के संकट का संतोषजनक समाधान हो जाए तो इससे भी महिलाओं को मदद मिलेगी। यदि छोटे बच्चों की देखरेख के लिए क्रेच की संतोषजनक व्यवस्था हो जाए तो इससे भी कई तरह के अवसर महिलाओं के लिए बढ़ सकते हैं।

हाल ही में जारी की गई ऑक्सफेम विषमता रिपोर्ट २०२० में कई अध्ययन और आँकड़ों के माध्यम से इन दोस्तों स्तरों पर प्रयासों के महत्व को रेखांकित किया गया है। इन रिपोर्ट में अपनी संस्तुतियों में कहा है कि चूंकि अवैतनिक देख-रेख कार्य महिलाओं की पहचान का एक मुख्य पक्ष है, अतः केवल इस कार्य के महिलाओं और पुरुषों में बेहतर पुनर्वितरण की पैरवी पर्याप्त नहीं है, इसके लिए अधिक गहरे, व्यापक, सामूहिक विमर्श की जरूरत है जिसमें लैंगिक संबंधों व सामाजिक मान्यताओं को जहाँ जरूरत हो वहाँ चुनौती दी जा सके। प्रचलित मान्यताओं और उनसे जुड़े व्यवहार में व्यापक बदलाव की जरूरत है। यह बदलाव धीरे-धीरे महिलाओं और पुरुषों के जीवन में आना चाहिए व सामुदायिक स्तर की सोच में भी जिससे यह व्यवहार निर्धारित या प्रभावित होता है। यह रिपोर्ट रेखांकित करती है कि इस तरह के बदलाव लाने के लिए अनुकूल माहौल बनाने में राज्य को अपनी भूमिका निभानी चाहिए। महिलाओं के लिए ऐसी सार्वजनिक सुविधाएं (उदाहरण के लिए, गैस स्टोव व शौचालय) व सेवाएं (ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षित व बेहतर यातायात, बच्चों के रख-रखाव की सुविधा जैसे क्रेच) ताकि वे श्रम-क्षेत्र में समान भागेदारी, आराम व फुरसत के अधिकारों को प्राप्त कर सकें।

रिपोर्ट के अनुसार स्कूलों व कालेजों में लैंगिक संवेदनीकरण व व्यवहार-बदलाव कार्यक्रम आरंभ करना चाहिए व इसमें देखभाल कार्य के पुनर्वितरण के संदेश को विशेष स्थान देना चाहिए। पुरुषत्व व नारीत्व की सही पहचान के सार्वजनिक अभियान आरंभ होने चाहिए जिससे परिवार व परिवार से बाहर श्रम संबंधी पूर्वाग्रहों को दूर किया जा सके। स्कूलों में किशोरों व किशोरियों में व समुदाय में महिलाओं व पुरुषों में लैंगिक समानता के लिए व्यापक लैंगिक सवेंदनीकरण के अभियान चल सकें, इसके लिए ऐसे सिविल सोसाइटी संस्थानों को सहयोग मिलना चाहिए जिनका समुदायों से गहरा जुड़ाव है।

व्यथा कथा

इन आँखों की अजब कहानी जब देखो, तब पानी-पानी !!

● उसकी पत्नी बार-बार उसकी माँ पर इल्जाम लगाए जा रही थी और पति बार-बार शान्त रहने को कह रहा था, लेकिन पत्नी चुप होने का नाम ही नही ले रही थी। वह जोर-जोर से चीख-चीखकर कह रही थी कि ''उसने अँगूठी टेबल पर ही रखी थी और तुम्हारे और मेरे अलावा इस कमरें में कोई नहीं आया, अँगूठी हो न हो माँ जी ने ही उठाई है।''

बात जब पति की बर्दाश्त के बाहर हो गई तो उसने पत्नी के प्रति गहरा आक्रोश जताया। अभी तीन महीने पहले ही तो शादी हुई थी। पत्नी आक्रोश से आहत हुई। वह घर छोड़कर जाने लगी और जाते-जाते पति से एक सवाल पूछा कि तुमको अपनी माँ पर इतना विश्वास क्यों है?

तब पति ने जो जवाब दिया उस जवाब को सुनकर दरबाजे के पीछे खड़ी माँ ने सुना तो उसका मन भर आया पति ने पत्नी को बताया कि ''जब वह छोटा था तब उसके पिताजी गुजर गये, माँ मोहल्ले के घरों में झाड़ू पोछा लगाकर जो कमा पाती थी उससे एक वक़्त का खाना आता था। माँ एक थाली में मुझे परोस देती थी और खाली डिब्बे को ढककर रख देती थी और कहती थी मेरी रोटियाँ इस डिब्बे में है बेटा तू खा ले मैं भी हमेशा आधी रोटी खाकर कह देता था कि माँ मेरा पेट भर गया है मुझे और नहीं खाना है।

'माँ ने मेरी जूठी आधी रोटियां खा-खाकर मुझे पाला-पोसा और बड़ा किया है आज मैं दो रोटी कमाने लायक हो गया हूँ लेकिन यह कैसे भूल सकता हूँ कि माँ ने उम्र के उस पड़ाव पर अपनी इच्छाओं को मारा है, वह माँ आज उम्र के इस पड़ाव पर किसी अँगूठी की भूखी होगी... यह मैं सोच भी नहीं सकता। तुम तो तीन महीने से मेरे साथ हो मैंने तो माँ की तपस्या को पिछले पच्चीस वर्षों से देखा है।''

यह सुनकर पत्नी भाव विभोर हो गई। उसे अहसास हुआ कि परस्पर पूरकता से ही सुख पाया जा सकता है। मां के प्रति उसके मन में कृतज्ञता का भाव जग गया। उसने मां से क्षमा मांगी।

यह सुनकर माँ की आँखों से आँसू छलक उठे वह समझ नहीं पा रही थी कि बेटा उसकी आधी रोटी का कर्ज़ चुका रहा है या वह बेटे की आधी रोटी का कर्ज़। तीनों एक-दूसरे के भावों का सम्मान रखते हुए जीने लगे।

● प्रस्तुति : अर्चन

आकार ले रहे बच्चों को शिक्षित, संस्कारित करने के सघन प्रयास

● प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का मूल उद्देश्य खुशी प्राप्त करना है किन्तु दूरदर्शन, सिनेमा, जनसंचार के आधुनिक विभिन्न माध्यमों के कारण समाज का वातावरण दूषित होता जा रहा है। आतंकवाद, भ्रष्टाचार, बलात्कार की घटनाओं में बाढ़ सी आती दिखाई पड़ रही है। इसका मूल कारण शिक्षा में मानवीय मूल्यों, संस्कारों एवं नैतिकता की उपेक्षा है। विद्यालय जो बालक के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित थे, वह संस्कार निर्माण में असहाय प्रतीत हो रहे हैं। शिक्षा का मूल उद्देश्य है कि व्यक्ति पढ़-लिखकर खुशी पूर्वक जीवन जीने की योग्यता प्राप्त कर सके एवं दूसरों को खुशीपूर्वक जीने में सहयोग प्रदान कर सकें। आज वह उद्देश्य कहीं भटक सा गया है। बालकों के ज्ञान में निरन्तर वृद्धि हो रही है किन्तु उनके आचरण में सभी प्रकार से ह्रास हो रहा है। मानवीय व्यवहार से उत्पन्न समस्याओं का स्थायी समाधान मात्र शिक्षा से ही संभव है। विद्यालय अपने दैनिक कार्यक्रम इस प्रकार से चलायें कि बालको में छिपी प्रतिभा एवं मानवीय गुणों का विकास हो सके। उनमें अनेक प्रकार की प्रतिभाएं छिपी हुई हैं। उन्हें मात्र जागृत करने की आवश्यकता है। उन्हें मानव के रूप में निर्मित करने की आवश्यकता है। बालक के संस्कार निर्माण में परिवार और विद्यालय की अहम भूमिका है। बाल काल में जो संस्कार बच्चों में पड़ जाते हैं वे सारी उम्र विद्यमान रहते हैं। आज भावी पीढ़ी में अच्छे संस्कार निर्माण की आवश्यकता है। यदि यह पीढ़ी शिक्षित-संस्कारित होगी, तो समाज में व्याप्त अनेक

■ विद्यासागर बाजपेई
कार्यक्रम प्रबन्धक
स्पान्सरशिप, चाइल्डफण्ड कार्यक्रम

प्रकार की बुराइयों से मुक्ति मिलेगी। सम्बन्धों की महत्ता एवं पवित्रता को बल मिलेगा। इसी को ध्यान में रखकर अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान ने मऊ एवं मानिकपुर विकासखण्ड में ३० शिक्षा संस्कार केन्द्र ६ वर्ष से ऊपर की आयुवर्ग के लिए एवं १६ बाल अभ्युदय केन्द्र ३ से ६ वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों के लिए संचालित कर रहा है।

संस्थान के प्रशिक्षित अनुदेशक एवं बालसखियों के द्वारा बच्चों को संस्कारित व शिक्षित करने का प्रयास चल रहा है ताकि इन केन्द्रों से निकलने वाले बालक-बालिकाएं शिक्षा के सही उद्देश्य को समझकर स्वयं खुशी पूर्वक जी सकें एवं दूसरों को भी खुशी पूर्वक जीने में सहयोग प्रदान कर सकें। इन केन्द्रों में विभिन्न गीतों, कहानियों एवं गतिविधियों के माध्यम से उन्हें सिखाने का अभ्यास कराया जाता है।

हैप्पीनेस पाठ्यक्रम के प्रयोग से बच्चे शीघ्र एवं सरलता से सीख रहे हैं। बच्चों में मानवीय गुणों का समावेश हो रहा है। बच्चों में व्यावहारिक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। इस पाठ्यक्रम से बच्चों में माता-पिता, गुरु एवं समाज के अन्य लोगों के प्रति उनके आचरण में निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। सभी के प्रति प्रेम एवं सौहार्द बढ़ा है। छोटे-छोटे बच्चे जब अपनी तोतली वाणी से प्रेरक गीत गाते हैं, कहानियाँ सुनाते हैं तो विस्मित हुए बिना नही रहा जाता। जिस प्रकार से वे शिष्टाचार प्रकट करते हैं, सम्मान देते हैं, कोई भी व्यक्ति उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। सुखरामपुर का ५ वर्ष का बालक कृष्णा, हरिजनपुर की ६ वर्ष की बालिका शालू, केकरामार की खुशबू आदि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। इन बच्चों से मिलकर मन प्रसन्नता से भर उठता है। शिक्षा का यह अनूठा प्रयास पल्लवित, पुष्पित होते दिखाई पड़ने लगा है। इन केन्द्रों में इनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यवहार, दैनिक दिनचर्या आदि सभी पर ध्यान दिया जाता है। अनुदेशकों, अनुदेशिकाओं के द्वारा बच्चों के घरों में जाकर परिवार के सदस्यों से सम्पर्क किया जाता है। उन्हे भी बच्चों को संस्कारित करने, आपसी व्यवहार, साफ-सफाई आदि के लिए प्रेरित किया जाता है। क्योंकि बच्चों का अधिक समय अपने परिवार के साथ व्यतीत होता है। घर का वातावरण भी बच्चे के अनुकूल होना आवश्यक है।

अन्त में यही पंक्तियाँ दोहराना सार्थक होगा कि -

"निर्माणों के पावन युग में, हम चरित्र निर्माण ना भूलें।"

"शिक्षा क्या, स्वर साध सकेगी, यदि नैतिक आधार नहीं है।"

कारगर सिद्ध हो रही खेल-खेल में बच्चों के पढ़ने की पद्धति

बच्चों की जुबानी
गाँव की राम कहानी

●तुरगवां गोकुल पुरवा (चित्रकूट) आदिवासी बाहुल्य गाँव है। भेद भाव, ऊँच-नीच स्थिति है। बच्चों के भविष्य के प्रति वनवासियों में कोई उत्साह-उम्मीद नहीं है। ५वीं ८वीं यदि हो भी गयी तो आगे का कोई रास्ता उनके पास नहीं रहता तथा बच्चों को भी अपने साथ मजदूरी में लगा लेते हैं। ज्यादातर परिवारों को काम के अभाव में परिवार सहित काम की खोज में पलायन करना पड़ता है। जो बच्चे गाँव में हैं, वे अभी से दुर्व्यसन के शिकार हैं। बीड़ी, गुटखा, से प्रारम्भ बचपन जवान होते-होते गांजा, शराब का शिकार हो जाता है। लत लग गई, आदत बन गई, पोषण का प्रबन्ध नहीं, और अंत में टी० बी०, कैन्सर जैसे घातक रोगों के शिकार होकर दुखद मौत के शिकार बनना कोल परिवारों की नियति बनती जा रही हैं। यहाँ स्वच्छ पेयजल का भी संकट है। शौचालय अपूर्ण तथा जर्जर हैं। महिला-पुरुष सभी को मल विसर्जन हेतु बाहर खुले में जाना पड़ता है। स्वच्छ भारत अभियान यहाँ दम तोड़ रहा है। सरकारी योजनाओं के पात्र गाँव के कुछ खास लोग ही बन पाते हैं। गोकुल पुरवा के बीच गाँव में नाली है। पानी बजबजाता रहता है, मच्छर पलते बढ़ते हैं, लोग बीमार होते हैं। वर्षांत में यहाँ की हालत और गम्भीर बन जाती है। पानी निकासी का यहाँ कोई प्रबन्ध नहीं है। पूर्व माध्यमिक तक की शिक्षा के बाद यदि किसी को आगे पढ़ना है तो वह बरगढ़ जाता है। बरगढ़ एक बडा गाँव है, बड़े लोगों का बाजार है। यहाँ पढ़ना, विद्यालयों की फीस देना, ग़रीबों की पहुँच के प्रायः बाहर होता है। उच्च शिक्षा से वंचित ऐसे बच्चों की जीवन यात्रा मजदूरी से प्रारम्भ होती है। इसी स्थिति में जीते हुए वे असमय मौत के भी शिकार होते हैं। दिल्ली, मुम्बई, सूरत, पंजाब, हरियाणा आदि सुदूर क्षेत्रों में, ठेकेदारों के जाल में फँसकर १०, १२ घण्टे काम कर इस गाँव के लोग अपनी वीरान ज़िन्दगी के दिन बिताते हैं। कई बार दुर्घटना के शिकार होते हैं, परिवार को छोड़, संसार से विदा होते हैं।

अंतिमा
कक्षा ६, ग्राम-तुरगवाँ

विकास ने क़दम नहीं रखा गांव में

संजना
कक्षा ८, ग्राम-खोहर

● खोहर ग्राम पंचायत में लक्ष्मी पुरवा एक मजरा है। जिसे १९६४ में लाल जी पंडित निवासी तुर्गवा ने बसाया था। यह गाँव चित्रकूट जिले का आखिरी गाँव है, जो मध्य प्रदेश के रीवा जिले की सीमा से लगा हुआ है। आज इस गाँव में लगभग २०० की आबादी है। श्री इन्द्रभान कोल पुत्र हरी प्रसाद कोल ७५ वर्षीय ने बताया कि आज़ादी के ६९ वर्ष बीत गये हैं लेकिन गाँव में कोई विकास नहीं हुआ है। सन् २००५ में गाँव में चकबन्दी हुई थी लगभग २० बीघे में बसी आबादी को चकबन्दी विभाग ने सामंतशाहों के इशारे पर पूरी आबादी को अचक कर दिया है। जिसके कारण आज इस गाँव को बड़े भूमिधर परेशान करते हैं। भूमिधरों का कहना है कि यह आबादी हमारी भूमि पर बसी है, इसे खाली करना होगा। अपने रहने के लिए जगह अभी से तलाश लो । गाँव के सभी लोगों ने सामूहिक रूप से मऊ जाकर तहसील दिवस, थाना दिवस में, एस. डी. एम. महोदय आदि से अपनी फरियाद सुनाई फिर भी कोई सुनवाई नहीं हुई। इसलिए हमारा गाँव बिजली, पानी, सरकारी आवास, विद्यालय एवं शौचालय विहीन है। इन वर्षों में कई सरकारें आयी और चली गयीं। गाँव में बहुत समस्याएं हैं। कोई सुनने वाला नहीं है। गाँव का दृश्य देखा जा सकता है। आज भी घास की झोपड़ी, छोटे कच्चे घरों में बसर कर रहे हैं। स्वच्छ

भारत मिशन के तहत जो शौचालय बनवाये गये हैं वे भी पहाड़ के पत्थरों के ऊपर नमूना खड़ा कर दिया गया है। अधिकांश ग्रामीण मैं भूमिहीन हैं, घास की झोपड़ी में रहते हैं, इस वर्ष बरसात में बहुत कष्ट मिला है। रात-रात भर बैठकर लोगों ने समय काटा है, कौन हमारा दर्द समझेगा राशन कार्ड से जितना राशन मिल जाता है उसी से अपना जीवन यापन कर रहे हैं। जीने का आधार नमक रोटी है, कभी-कभार गाँव के लोगों से सब्जी, मट्ठा, साग (सब्जी) मिल जाता है।

बहुत बदहाल है गांव

● गोइयां ग्राम पंचायत की सत्यनारायण नगर में ग्राम प्रधान का घर। प्रधान जी के घर तक बढ़िया आर० सी० सी० मार्ग। भौंठी गाँव भी गोइयां ग्राम पंचायत में आता है। इस गाँव में आज तक एक भी पक्का-पुख्ता मार्ग नहीं है। पक्का मार्ग नहीं है तो नाली भी नहीं है। नाली नहीं है तो पानी का जमाव गाँव में जगह-जगह देखा जा सकता है। वर्षा के दिन काल बनकर आते हैं। गलियों में घास उग आती है। घास के अन्दर साँपों के छिपने का अड्डा बना रहता है। गतवर्ष घास से चलकर एक व्यक्ति को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। घास के अन्दर काला नाग था। पैर पड़ते ही नाग ने डस लिया। चिकित्सा सुविधा के अभाव में व्यक्ति की मौत हो गई। गाँवों की ज़िन्दगी आज भी सुविधा के लिए तरस रही है। ग्राम पंचायत सचिव के भरोसे चलती है। सचिव शहरवासी होता है। प्रधान उसके चक्कर लगाते हैं। ऐसे ही देश के लोकतंत्र की गाड़ी सचिव साहबों के बल पर चल रही है। "यह देश मेरा धरा मेरी, गगन मेरा, इसके लिए बलिदान हो। प्रत्येक कण मेरा, प्रत्येक क्षण मेरा यह भाव अभावग्रस्त है।"

प्रीती
कक्षा १०, ग्राम-भौंठी

जंगली जानवरों से हलाकान है ऊँचाडीह

● ऊँचाडीह। उत्तर प्रदेश एवं मध्यप्रदेश के दो प्रान्तो के बीच पनहाई रेल्वे स्टेशन से जुड़ा हुआ यह गाँव विभिन्न नदी नालों, तालाबों एवं बांधों से घिरा हुआ है। ग्रामीणों का मानना है कि यह अन्य कई स्थानो की अपेक्षा काफी ऊँचाई में बसा होने के कारण इस गाँव का नाम ऊँचाडीह पड़ा है। ग्रामीणों ने बताया की पुराने समय में यहाँ पर जल स्रोतों का अभाव था, सांवा, काकुन, जौ, चना का उत्पादन बिना खाद के कम पानी में होता था, इसी की खेती की जाती थी और लोग इसी का सेवन करते थे। निरोगी रहते थे। उस समय खेती करने के लिये रासायनिक खाद प्रयोग करने का प्रचलन नहीं था। धीरे-धीरे गाँव का विकास हुआ और यहाँ पर 'पनहाई बाँध' का निर्माण किया गया। तालाब की खुदाई की गयी ताकि पानी का भण्डार किया जा सके। फिर कुँआ-तालाब के पास जिन किसानो की खेती थी, उनकी फसल की पैदावार अच्छी होने लगी। जो लोग ऊँचे स्थानों पर बसे हुये थे वो मूंग, उड़द, तिल आदि का उत्पादन करने लगे। किन्तु यहाँ हमेशा जंगली जानवरो का भय बना रहता है, जो व्यक्ति और फसल को नुकसान पहुँचाते रहते हैं। वर्तमान समय में यहाँ पर गेहूं, धान, सरसों, तिल, चना का उत्पादन होने लगा है। बरसात के समय नदी-नालों में पानी बढ़ जाने के कारण लोग पम्पिंग सेट मशीन से सिंचाई कर लेते हैं। आवागमन के लिये पैसेन्जर ट्रेन है जो सुबह-शाम आती जाती है। ट्रेन के अलावा प्राइवेट जीप, आटो व निजी संसाधनों से भी लोग आते-जाते हैं। बरसात में बाढ़ आ जाने पर निजी संसाधन भी नही आ जा पाते।

भूमि का स्वरूप : गाँव की अधिकांश भूमि पथरीली है जिससे यहाँ पर बहुत कम उत्पादन होता है। जिन किसानो के पास कुँआ या नाले के पानी की सुविधा नही है उनके पास कुछ महीनो के लिये खाने पीने के लिये अनाज हो जाता है।

आवास : यहाँ के कोल, हरिजन परिवार के लोग कच्चे मकान में अपना जीवन यापन कर रहें है। दुल्लका कोल की स्थिति तो यह है कि वह आज भी घास-फूस एवं पन्नी की झोपड़ी बनाकर परिवार सहित रह रहा है।

शिक्षा : गांव में पहले केवल प्राथमिक विद्यालय था, जिसमें वहाँ के बच्चे ५वीं तक की पढाई पूरी करते थे। कुछ वर्षों पूर्व यहाँ इन्टर कालेज बन गया है।

● रमपुरिया ।ग्राम पंचायत-सरैंया। लगभग छह दशक पहले ठाकुर गजराज सिंह ने अपनी ज़मीन पर यह गाँव बसाया था। आवासित सभी कोल परिवार ठाकुर के यहाँ बंधुआपन में काम करके अपना जीवन-यापन करते थे। यह गाँव झगरौंहा पहाड़ से लगा हुआ बसा है। यहाँ पहले घनघोर जंगल था, गाँव के पास से नाले बहते थे। जंगल में शेर, भालू, चीता अनेक खतरनाक एवं जंगली जानवर रहते थे। अधिकांश लोग इन जंगली जानवरों का शिकार करते थे। आज भी बारिस में सर्प के काटने से २-४ लोगों की मृत्यु हो जाती है। पुल सड़क ना होने के कारण सभी को परेशानी का सामना करना पड़ता था। इसके पश्चात सरकार द्वारा केवरा नाला एवं पहाड़ के पानी को बांध कर अहरी बांध बना दिया गया, जिससे वहाँ के लोग धीरे-धीरे खेती करने लगे।

जीविकोपार्जन- पहले इस गाँव के लोग पहाड़ से महुआ, चिरौंजी, आँवला, आदि लाकर अपना गुजर बसर करते थे। पहले भी लकड़ी तोड़कर बेंचना इनका मुख्य व्यवसाय था। आज भी जीविकोपार्जन का यही मुख्य व्यवसाय है। जंगल साफ हो जाने के कारण यहाँ जंगली जानवर, पेड़-पौधे धीरे-धीरे नष्ट होते जा रहे हैं। पहले फसल में बिना वर्षा के साँवा, काकुन, कोदो, जौ हो जाता था। लेकिन वर्तमान में साँवा, काकुन, कोदो का बीज भी नहीं मिलता है ऐसे मोटे अनाज शरीर को ताक़तवर बनाते थे अब केवल अरहर, ज्वार, बाजरा, चना, गेहूं की पैदावार ज्यादा होती है।

रमपुरिया के कुंता ने बताया कि यहाँ लगभग कुल ८० कोल परिवार निवास कर रहे हैं। आधे परिवार के पास जमीन के पट्टे हैं। जो अपनी खेती से परिवार का भरण पोषण कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त भूमिहीन परिवार मजदूरी करने के लिए अक्सर पलायन करते हैं। इस कारण छोटे बच्चों की पढ़ाई भी बाधित होती है।

शिक्षा व्यवस्था- यहाँ केवल प्राइमरी विद्यालय है जहाँ कक्षा ५ तक की ही पढ़ाई आसानी से हो पाती है। इसके पश्चात आगे की पढ़ाई के लिए लोगों को गाँव से ६ किमी० दूर सरैंया जाना पड़ता है। जिनके पास संसाधन होते हैं, वह सरैंया जाकर अपनी आगे की पढ़ाई पूरी करते हैं। लेकिन यह संख्या बहुत ही कम है।

पेयजल व्यवस्था- यहाँ पर पहले पेयजल का बहुत संकट था। कुँआ, तालाब का पानी मुश्किल से मिलता था। संस्थान द्वारा वर्ष २०१८ में सौरऊर्जा संचालित वाटर सप्लाई का कार्य कराया गया है। जिससे सबको स्वच्छ एवं साफ पानी मिलने लगा है।

संकलनकर्ता : शिवमंगल बाबा, शिवबरदानी, देशराज यादव, विनोद, जगत सिंह

बच्चों के बेपरवाह पालकों को सुधारती है भारती

● अर्चन
सामाजिक कार्यकर्ता

● चित्रकूट। मानिकपुर। गाँव हरिजनपुर।.... यह पता है भारती का। ग़रीब, दबे-कुचलों की बस्ती की बेहद ग़रीब घर की बिटिया रानी है भारती। घर में वृद्ध बाबा-दादी, माँ-पिता हैं। एक छोटी बहन है। चद्दर में बाँधकर सिर में धरकर चल देने भर को कुल गृहस्थी वाले घर में जन्मी भारती के घर में हँसने की रत्तीभर गुंजाइश नहीं है। लम्बे अर्से से माँ और पिता दोनों लाइलाज गम्भीर बीमारी से ग्रस्त हैं। फिर भी दुनिया के किसी कोने से मुस्कानें समेटकर हँसती है भारती, इसलिए कि अगर वह रोएगी तो घर दम तोड़ देगा। वह अकेली बूढ़े बाबा-दादी, बीमार अम्मा-बापू और छोटी बहन की हँसी-खुशी है, पालक है। बेटी का कलेजा कितना बड़ा होता है, कितना जीवट, कितना दमदार होता है कोई भारती के अम्मा-बापू से जाकर पूछे।....

सच!- जाने क्या-क्या सोचती रहती है भारती,
सुनती है ज्यादा कम कहती है भारती।
आफतें, दुख-दर्द के पहाड़ों को लाँघकर,
इक पतली नदिया सी बहती है भारती।।

भारती बी०ए० कर रही है। पढ़ते हुए वह माता-पिता का सुपोषण कर रही है। बहन पढ़ा रही है। अभावों से जूझती भारती को हिम्मत दी अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के निदेशक राष्ट्रदीप जी ने, उन्होंने उसे समाज कार्य के लिए प्रेरित किया संस्थान में पहले बालसखी फिर प्रेरक का दायित्व सौंपा। अब भारती संस्थान द्वारा संचालित चाइल्डफण्ड इण्डिया कार्यक्रम की कुशल सामाजिक, शैक्षणिक प्रेरक है। संस्थान द्वारा संचालित बाल अभ्युदय शिक्षा संस्कार केन्द्रों में आने वाले ग़रीब समुदाय के सैकड़ों बच्चों के अभिभावकों को बच्चों के प्रति जिम्मेदार होने के लिए प्रेरित करती है, उन्हें भलीभाँति समझाती है, ग़ैरजिम्मेदार अभिभावकों की अक्ल सुधारती है। भारती के प्रयास फलित हो रहे हैं। आदिवासी परिवारों से बच्चे साफ-सुथरे, सजे-धजे, तेल-कंघी किए पढ़ने निकल रहे हैं।

'रोज़ कमाने-रोज़ खाने' की मजबूरी में घर-घाट के न रहने वाले आदिवासी समाज के बच्चों को शिक्षा से जोड़ना कठिन काम है। भारती इस काम को सरल बनाने में जुटी है। कुछ सवालों पर भारती ने बताया कि, ''आदिवासी समुदाय में रोज़ी-रोटी के लिए दर-ब-दर रहने के कारण बच्चों की पढ़ाई-लिखाई बाधित होती है। तमाम घरों में नशाखोरी के कारण भी बच्चों का पठन-पाठन मुश्किल हो जाता है।''

मुट्ठीभर जीवन की जरूरतें लेकर, समाज को अपना भरपूर समय, सेवा, साहस देने वाली भारती जैसी बेटियों की ही जरूरत है, ग़रीब अशिक्षित समाज को।

□□

अर्चन के कुछ फागुनी दोहे

गाँव निहारे रास्ता, लेकर रंग-अबीर।
लौटेंगे परदेश से, ईशुरी संग कबीर।।

●

गये कमाने हैं शहर, सब नन्हे-बूढ़े पाँव।
रंग-उत्सव के लिये, फागुन ढूढ़ें गाँव।।

●

घुटकीभर दारू पिए, लोई भर लीले भाँग।
रमई काका ला रहे, फगुना कांधे टाँग।।

●

घर-बाहर के मल्लयुद्ध, कंसो का संसार।
होली फगुवा नहीं लिखा, प्यारी अपने लिलार ।।

●

देखो कैसे रहा धधक, मेरा बरसाना गाँव।
फागुन में ही हो रहा, कंसो का चुनाव।।

●

राहु-केतु सिर में चढ़े, धरे शनीचर पाँव।
होली में भी न आ सका, राधा तेरे गाँव।।

●

फसल कटी चूल्हा जला, फिर से दोनो जून।
गाँव गमकने फिर लगा, भौजी का राईनून।।

●

धरे सोन खलिहान में, चांदी सी बिदुरात।
थ्रेसर जैसे कतरे, भौजी भैया की बात।।

●

भौजी तितली सी लगे, भैया जी गिरदान।
दोनों का रंग देखकर, है फागुन हैरान।।

●

घर की मछलारानी का, अच्छा-खासा छल-बल।
आल्हा सेंके रोटियाँ, बर्तन धोए ऊदल।।

●

धानी चूनर पहनकर, नाचै ताल-बेताल।
महुवा सब चुई-चुई परैं, झरै पलाश-गुलाल।।

●

टूटे बक्से से खींचकर, धूमिल सा फोटो फ्रेम।
याद किया रख सीने में, बूढ़े ने बिछुड़ा प्रेम।।

●

लोक-लय

छेड़ देती हैं बूटी जब, कोयल जैसी तान
रूखे-सूखे गाँवों में, आ जाती है जान

● अर्चन

सचमुच ! बूटी दीदी कोयल सा सुरीला गाती हैं। सोने पे सुहागा तो यह है कि वे गा-गाकर गाँवों में अलख जगाती हैं। चित्रकूट के पाठा याने मानिकपुर क्षेत्र की बूटी अपने अदिवासी समुदाय की लोकप्रिय गौनहर (गायिका) हैं, मालिनी अवस्थी हैं, स्वर-कोकिला लता मंगेश्कर हैं। आदिवासी जीवन की जितनी तकलीफें हो सकती हैं, सब की सब रहीं, सबको सिर पर सहर्ष लकड़ी के गट्ठर की तरह ही उठाया और चलती रहीं। सुख-दुख ओढ़ा-बिछाया जीवन भर गाया-हँसाया, गाँवों को जगाया। भली-भली सी, सांवली सी बूटी दीदी आदिवासी संस्कृति का सबसे गोरा-चित्ता उजर-फक्क चेहरा है। जिनकी पहचान समाज सेवी गोपाल भाई जी ने तीन दशक पहले ही कर ली थी, तब वे 'बंधुवा मजदूर' थी अब श्रीमती बूटी कोल सशक्त सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

वे चहक-चहक कर ग़रीब बस्तियों की उदासी तोड़ती हैं। हासिए पर पड़े समाज को मुख्यधारा से जोड़ती हैं। इन दिनों अपने गाँव सरहट में 'चाइल्डफण्ड इण्डिया' कार्यक्रम के तहत अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान द्वारा संचालित बाल अभ्युदय केन्द्र को चलाती हैं, बच्चों को पढ़ाती हैं, संस्कार सिखाती हैं, पर उनकी मूल पहचान लोक गायिका, लोक नर्तकी के रूप में ही है। गाँव उन्हें बिना गवाए नहीं छोड़ते या यूँ कहें कि वे जहाँ भी जाती हैं, गाँवों को बिना गवाए-नचाए नहीं छोड़तीं। कुदरत ने उन्हें सुरीला कण्ठ सौंपा है....पुरखों ने पारंपरिक लोक विधाएँ....तो सामाजिक कार्यकर्ता बनाने वाले गोपाल भाई जी ने उन्हें जन-जागरण के गीतों की गठरी सौंपी है। लोक विधा कलाकार में जितनी खूबियाँ हो सकती हैं वे उनमें कुदरत ने कूट-कूट भरी हैं। उलाहने भरे स्वर में गाना और बतियाना बूटी दीदी की सबसे बड़ी खूबी है।

मुश्किल से कक्षा ५ पास बूटी जी फर्राटे से समाज को पढ़ती हैं और दुनिया से कतराते समाज को पढ़ाती हैं। ग़रीबों के हक़-हुकूकों के लिए जिम्मेदार लोगों से तड़ातड़ बोलती हैं। जुल्म-ज्यादती के खिलाफ लड़ती हैं, त्यौरियाँ तानती हैं, आँखे तरेरती हैं। अपने जन-जुड़ाव के चलते वे न बिकने वाली, बाहुबली को हराने वाली जिला पंचायत सदस्य भी रह चुकी हैं। जन-कण्ठों में गान-तान देने वाली बूटी दीदी जब गाती हैं- *''ऐसा मिजाजी गाँव रे, ह्याँ कोउ ब्वालै न चालै''* (अर्थात यह ऐसा घमंडी लोगों का गाँव है जहाँ लोग बोलते-बतियाते नहीं हैं) सुनकर लोग दौड़ पड़ते हैं। गोपाल भाई जी के अनुसार, ''टिप्पा (कोलहाई का ही एक अंग) नृत्य बहुत ही कठिन है किन्तु सहज रूप से बूटी ही उस नृत्य का ठीक-ठीक निर्वाह कर पाती है। राई विधा का 'बनबाला नृत्य' करते समय बूटी मंच की एक मात्र शोभा बन जाती है। बूटी को अवसर मिले तो वे देश की एक बड़ी पूँजी सिद्ध हो सकती हैं।'' उनकी लोकविधा के कुछ बोल द्रष्टव्य हैं -

मुरेरवा : दरबारी घरै चला
आ बँगला मोरा चुवै।।
विदेसवा मा तैं,
लाली जिया मरवाये।।

सजनई : चिहुंटी की बिटिया, गेंदुली की नातिन
नौ मन काजल देय।
धरती उलट कै लंग्वाटा मारै, तरई के बेंदी देय।
बेंदी मोरी बारे कै बैरिन आय।
न लेबै कांसा रे कुटकी न लेबै कनिक पुराना,
हम तो रे लेबै कूसी का लहँगा
जोनै पहिर घर जाँव। वही गली रेंगों सराहना रे होय।।

□□

किस्सा... पागदिलपुर

राजाबुआ
आजीविका समन्वयक
चाइल्डफण्ड कार्यक्रम

● पागदिलपुर। गिदुरहा का अस्तित्व १९३० तक नहीं था। आज गिदुरहा में रह रहे कोल परिवार या तो कटरा के या फिर आसपास के गाँवों के निवासी हैं, जिनके पूर्वज गिदुरहा में आकर बसे। १९३० के पूर्व यहाँ पर बाबूलाल तिवारी सिकरौं की जमींदारी थी जिनसे फादर एन्ड्रो व सिरिल जो झाँसी मिशनरी से आये थे उन्होंने बाबूलाल तिवारी से १००० बीघा जमीन खरीद कर डाक बंगला के बाहर पागदिलपुर की नींव रखी तथा एक छोटे चर्च का निर्माण कर धर्म प्रचार करने लगे। फादर एन्ड्रो के साथ लगभग ३० परिवार यहाँ पर झाँसी, सागर, कानपुर व बलिया से आये थे इनमें बलिया के श्री डी० एम० चरन का परिवार आज भी पागदिलपुर में रह-रहा है। यहाँ पर सभी परिवार झोपडियाँ बनाकर रहते थे तथा अपने-अपने खेत जो फादर द्वारा दिये गये थे उनको कृषि योग्य बनाने का कार्य करते थे क्योंकि उस समय यहाँ पर घन-घोर जंगल था। कुछ परिवार मध्यप्रदेश के रीवा जिले से यहाँ आये थे जिनमें, राबर्ट जोसेफ, रमेजू एवं लाजरस प्रमुख थे। उस समय क्षेत्र में सूखे का प्रकोप था लोगों की खड़ी फसलें सूख गईं थी, जीविका का कोई आधार नहीं था, लोग दाने-दाने को मोहताज थे, ऐसे समय में धर्मप्रचार के समय फादर का सम्पर्क कटरा गाँव में हुआ और गाँव के लोगों से सम्पर्क कर फादर ने गाँव के लोगों को १ वर्ष तक काम देने का आश्वासन दिया और कहा कि हम आपको काम के बदले अनाज देगें आप लोग भूखे नहीं रहेंगे आप गिदुरहा चलो। फादर के आश्वासन के बाद अध ारिया, चुनबुदुवा, फलवा, खुनुवा, समई, निहोरा तथा बालगीर आदि कोल परिवार गिदुरहा आये और फादर के बताये स्थान पर झोपड़ी बनाकर रहने लगे तथा फादर के यहाँ काम करने लगे। गिदुरहा गाँव के श्री चुक्का ने बताया कि उस समय हमको आठ आने मजदूरी मिलती थी। जिन लोगों के पास बैल व बैलगाड़ी थी वे ठेकेदारों के यहाँ रझौंहा से मानिकपुर तक लकड़ी ढ़ोने का कार्य करते थे और १० मन (१२ पसेरी प्रति मन) की ढुलाई जिसमें दो दिन लगते थे, ४ से ५ रूपया मिलता था। इसके बाद आदिवासी परिवार फादर एवं श्री गुलजारी लाल श्रीवास्तव की ज़मीन बंटाई पर लेकर खेती का कार्य करने लगे और जमींदारी उन्मूलन के बाद लोगों को पट्टे मिले जिसमें आज भी खेती कर रहे हैं। ईसाई परिवार जो बाहर से आये थे उनका मन यहाँ नहीं लगा जब कि फादर ने मिशन की ओर से दैनिक उपयोग की सामग्री की दुकानें भी खुलवा रखी थी। फादर के फार्म में काम भी पर्याप्त मिलता था तथा दलिया व तेल समय-समय पर मिशन की ओर से दिया जाता था फिर भी बाहर से अधिकांश परिवार वापस चले गये। आज मुख्य रूप से श्री डी० एम० चरन के परिवार के लोगों के साथ-साथ २०-२५ परिवार ही यहां रह रहे हैं लेकिन इनका रहन-सहन व घरों के आस-पास का वातावरण अलग ही है। यहाँ पर मिशन का विद्यालय भी चल रहा है जिसमें पागदिलपुर, गिदुरहा के अलावा आस-पास के गाँवों के बच्चे भी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

बड़ाहार का हाल बुरा है

आशीष कुमार
समाजकार्य छात्र

● आपको यकीन नहीं होगा कि आज भी एक गाँव ऐसा है चित्रकूट में जहाँ आज़ादी के बाद आज तक किसी ने स्कूल का मुँह नहीं देखा। यहाँ के ग्रामीणों ने मूलभूत सुविधाओं का अब तक स्वाद नहीं चखा ऐसा गाँव है मानिकपुर तहसील के अन्तर्गत आने वाला गढ़चपा ग्राम पंचायत का बड़ाहार का पुरवा। गढ़चपा ग्राम पंचायत के बड़ाहार मजरे की मौजूदा हालत बद्तर है। फिलहाल बीते ७० वर्ष के बाद अब बिजली आ गई है। इस गाँव के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति हैं कृष्णा कोल जिनकी उम्र ८५ वर्ष है, इन्होंने २५ वर्ष की उम्र में पेयजल समस्या के कारण गाँव में खुद ही मेहनत से एक कुँआ खोद डाला। इन्हें "बुन्देलखण्ड का दशरथ माझी" कहा जाय तो गलत नहीं होगा। गाँव में मनरेगा के तहत कुछ दूर तक आवागमन हेतु प्रधान रामेन्द्र के द्वारा मिट्टी भी डलवा दी गई लेकिन वन विभाग की अड़चन और जनप्रतिनिधियों की संवेदनहीनता के चलते इस गाँव का मुख्य सड़क से आज तक कोई सीधा सम्पर्क नहीं हो पाया है। ध्यान देने वाली बात यह है कि इस गाँव में कोल आदिवासी रहते हैं, जिनके सामने अब तक दस्यु समस्या किसी मुसीबत से कम नहीं थी। गाँव में न तो स्कूल है और न ही पर्याप्त मात्रा में पेयजल की व्यवस्था। इस गाँव में निवास करने वाली आबादी में आधे से ज्यादा पुरुष रोज़गार की तलाश में पलायन कर चुके हैं। चारो तरफ घने जंगल में पेयजल सबसे बड़ा संकट है। इस गाँव में सरकारी सिस्टम कैसे फेल नजर आता है इसकी बानगी ये है कि गाँव में लेखपाल भी कभी नहीं आता। इस गाँव के बच्चों में कुपोषण की भी समस्या है।

जनकवि कैलाश गौतम को याद करते हुए..

● अर्चन

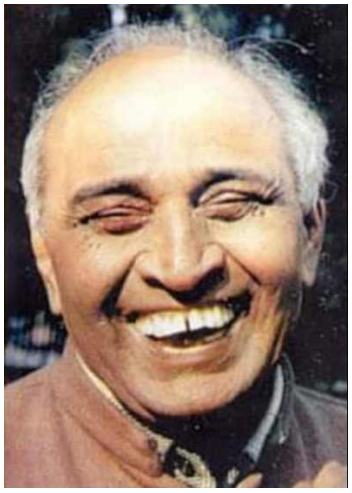

प्रयागराज। महाकुंभ, माघ मेले का नगर। गंगा-यमुना-सरस्वती का संगम तट। देश के धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक प्रवाह का अभूतपूर्व संगम, जहाँ सारा विश्व हमारे महादेश के आध्यात्मिक जप-तप, समृद्ध जनसंस्कृति, और सामाजिक मेल-मिलाप, समरसता, एकरूपता को एकटक देखता रह जाता है। अगाध आस्था के अपार मेले के विविध रंग-रूप देखते-देखते चित्त यहाँ इस तरह खो जाता है कि स्वयं को ढूँढ़ना पड़ जाता है।

इधर मेले में दुनिया मिल रही है।...बस एक आदमी ढूँढ़े नहीं मिल रहा है। उस चित्तचोर को मेरी ही तरह जाने कितनी जोड़ी आँखे ढूँढ़ रही हैं। बहुत धीर-गंभीर इंसान हैं वह। बंदा मिलते ही भरी भीड़ के अधरों पर हज़ार मुस्कानें जड़ने की कुब्बत रखता है। भूली-भटकी गँवई भीड़ का दौड़-दौड़कर हाथ पकड़ता है। ठिकाने से ठिकानों पर वही तो ठहराता है। ...एक अदद आदमी भर नहीं है वह। भरा पूरा गाँव है। जो अब अच्छे-भले गाँवों की तरह ढूँढ़े नहीं मिल रहा।

गंगा-जमुना के कछार में झर-झर झरती जनकविता का झरना है वह। चाल-चलन से सीधा-सपाट, गाँव-ग़रीबी, चाकरी और साहित्य की दीर्घ साधना से पका-तपा ललाट वाला वह तीक्ष्णनक, बड़दंत भलमानुष अपनी कविता की गठरी थमाकर वर्ष २००६ से दुनिया के मेले-रेले में हम सबको छोड़कर चलता बना।

क़लम, जुबान, पैरों और धुन का बड़ा छुट्टा आदमी था। साहित्य के किसी खूँटे-खेमें में कभी नहीं बँधा, साहित्यिक पंडो-हथकंडों में कभी नहीं फँसा। जन-पीड़ाओं में धँस-धँसकर भी समाज को ज़िन्दादिल रखने के लिए खूब हँसाया, खूब हँसा।

मेले में दुनिया मिल रही है वह बेहद जरूरी आदमी ढूँढ़े नहीं मिल रहा। चलो, मेले के 'भूले-भटके शिविर' के चोंगा से एक पुकार तो लगा ही देते हैं... हलो... कृपया ध्यान दीजिए... गाँव डिग्घी... जिला चंदौली... उत्तर प्रदेश के रहने वाले कैलाश गौतम... आकाशवाणी प्रयाग वाले कैलाश गौतम, देश के जाने-माने जनकवि कैलाश गौतम यदि आप हमारी आवाज़ सुन रहे हैं तो कृपया 'उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र' के 'चलो मन गंगा-जमुना तीर के मंच पर पहुँच जाएँ... हज़ारों सुधी श्रोता आपकी बाट जोह रहे हैं।

बंधुओ ! हम जानते हैं, संगम में सरस्वती मैया की तरह अदृश्य सरस्वती पुत्र कैलाश गौतम का अब कभी भौतिक दर्शन नहीं होगा !!! जनमानस से सैकड़ों ज़रीब दूर होते मौजूदा बनावटी-सजावटी साहित्य के बीच कैलाश गौतम की कविता जनकंठों में ज़िन्दा है, हमेशा ज़िन्दा रहेगी। आइये जुड़ते हैं मंचों पर खूब सुनी गई उनकी एक कविता से....

गाँव गया था
गाँव से भागा।
रामराज का हाल देखकर
पंचायत की चाल देखकर
आँगन की दीवाल देखकर
सिर पर आती डाल देखकर
नदी का पानी लाल देखकर
और आँख में बाल देखकर
गाँव गया था
गाँव से भागा।

गाँव गया था
गाँव से भागा।
सरकारी स्कीम देखकर
बालू में से क्रीम देखकर
देह बनाती टीम देखकर
हवा में उड़ता भीम देखकर
सौ-सौ नीम हक़ीम देखकर
गिरवी राम-रहीम देखकर
गाँव गया था
गाँव से भागा।

गाँव गया था
गाँव से भागा।
जला हुआ खलिहान देखकर
नेता का दालान देखकर
मुस्काता शैतान देखकर
घिघियाता इंसान देखकर
कहीं नहीं ईमान देखकर
बोझ हुआ मेहमान देखकर
गाँव गया था
गाँव से भागा।

गाँव गया था
गाँव से भागा।
नए धनी का रंग देखकर
रंग हुआ बदरंग देखकर
बातचीत का ढंग देखकर
कुएँ-कुएँ में भंग देखकर
पुलिस चोर के संग देखकर
गाँव गया था
गाँव से भागा।

गाँव गया था
गाँव से भागा।
बिना टिकट बारात देखकर
टाट देखकर भात देखकर
वही ढाक के पात देखकर
पड़ी पेट पर लात देखकर
मैं अपनी औकात देखकर
गाँव गया था
गाँव से भागा।

गाँव गया था
गाँव से भागा।
नए नए हथियार देखकर
लहू-लहू त्योहार देखकर
झूठ की जै-जैकार देखकर
सच पर पड़ती मार देखकर
भगतिन का श्रृंगार देखकर
गिरी व्यास की लार देखकर
गाँव गया था
गाँव से भागा।
गाँव गया था
गाँव से भागा।
मुट्ठी में कानून देखकर
किचकिच दोनों जून देखकर
सिर पर चढ़ा जुनून देखकर
गंजे को नाखून देखकर
पंडित का सैलून देखकर
गाँव गया था
गाँव से भागा।

□□

संस्थान की प्रशंसा को मिला 'जल-प्रहरी' सम्मान

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान, चित्रकूट की कार्यकर्ता सुश्री प्रशंसा गुप्ता को सरकारी टेल डॉटकाम संस्था की ओर से वर्ष २०१६ के 'जल-प्रहरी' सम्मान से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें दिनांक १६ दिसम्बर २०१६ को नई दिल्ली के एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। सम्मान समारोह में श्री गजेंन्द्र सिंह शेखावत, माननीय मंत्री, जलशक्ति, भारत सरकार, सांसद श्री मनोज तिवारी, नई दिल्ली, श्री यू०पी० सिंह, सचिव, जलशक्ति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, श्री शिशिर चंद्रा, कार्यक्रम समन्वयक, वाटर एड, लखनऊ, श्री पुनीत श्रीवास्तव, तकनीकी विशेषज्ञ, वाटर एड, नई दिल्ली समेत बड़ी संख्या में जल संरक्षण से जुड़ी संस्थाओं के जल विशेषज्ञ, संरक्षक मौजूद रहे।

उल्लेखनीय है कि सुश्री प्रशंसा संस्थान द्वारा संचालित एवं वाटर एड द्वारा वित्तपोषित 'जल सुरक्षा एवं स्वच्छता परियोजना' में बतौर समन्वयक बांदा जनपद में जल संचयन, संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए उल्लेखनीय, प्रशंसनीय प्रयोग, प्रयत्न किए हैं।

विश्व का सबसे अनोखा मुक़दमा

काश! ऐसे मुक़दमे घर-घर में होते.....

न्यायालय में एक मुक़दमा आया, जिसमें सभी को झकझोर दिया। अदालतों में प्रापर्टी विवाद व अन्य पारिवारिक विवाद के केस आते रहते हैं। मगर यह मामला बहुत ही अलग किस्म का था।

एक ७० साल के बूढ़े व्यक्ति ने अपने ८० साल के बूढ़े भाई पर मुक़दमा किया था। मुक़दमें का सार कुछ ऐसा था कि ''मेरा ८० साल का बड़ा भाई, अब बूढ़ा हो चला है, इसलिए वह खुद अपना ख्याल भी ठीक से नहीं रख सकता। मगर मेरे मना करने पर भी वह हमारी ११० साल की माँ की देखभाल कर रहा है।

मैं अभी ठीक हूँ, इसलिए अब मुझे माँ की सेवा करने का मौका दिया जाए और माँ को मुझे सौंप दिया जाय''।

न्यायाधीश महोदय का दिमाग घूम गया और मुक़दमा भी चर्चा में आ गया। न्यायाधीश महोदय ने दोनों भाइयों को समझाने की कोशिश की कि आप लोग १५-१५ दिन रख लो। मगर कोई टस से मस नहीं हुआ, बड़े भाई का कहना था कि मैं अपने स्वर्ग को खुद से दूर क्यों होने दूँ। अगर माँ कह दे कि मेरे पास रहने में कोई परेशानी है या मैं उसकी देखभाल ठीक से नहीं करता, तो अवश्य छोटे भाई को दे दो। छोटा भाई कहता है कि पिछले ४० साल से अकेले ये सेवा किये जा रहा है, आखिर मैं अपना कर्तव्य कब पूरा करूँगा।

परेशान न्यायाधीश महोदय ने सभी प्रयास कर लिये, मगर कोई हल नहीं निकला। आखिर उन्होंने माँ की राय जानने के लिए उसको बुलवाया और पूछा कि वह किसके साथ रहना चाहती है। माँ कुल ३० किलो की बेहद कमजोर काया थी और बड़ी मुश्किल से व्हीलचेयर पर आई थी। उसने दुखी दिल से कहा कि मेरे लिए दोनों संतान बराबर हैं। मैं किसी के पक्ष में फैसला सुनाकर, दूसरे का दिल नहीं दुखा सकती। आप न्यायाधीश हैं, निर्णय करना आपका काम है, जो आपका निर्णय होगा मैं उसको ही मान लूँगी।

आखिर न्यायाधीश महोदय ने भारी मन से निर्णय दिया कि न्यायालय छोटे भाई की भावनाओं से सहमत है कि बड़ा भाई वाकई बूढ़ा और कमजोर है। ऐसे में माँ की सेवा की जिम्मेदारी छोटे भाई को दी जाती है।

फैसला सुनकर बड़ा भाई जोर-जोर से रोने लगा कि इस बुढ़ापे में मेरे स्वर्ग को मुझसे छीन लिया। अदालत में मौजूद न्यायाधीश समेत सभी रोने लगे।

प्रस्तुति : अर्चन

प्रेरणा

"मेरा नाम डेजी है, मेरी माँ ने मुझे अमरूद के 95 पेड़ सौंपे हैं"

डेजी एक होनहार युवती। बहुत कुछ करने की तमन्ना। जीवन संग्राम में साहस के साथ आगे बढ़ रही हैं-सं०

● मेरा नाम डेजी है । मेरे पिता का नाम स्वर्गीय श्री जुग्गीलाल है। मैं अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान में संचालित चाइल्ड फण्ड इण्डिया द्वारा समेकित बाल विकास परियोजना के अन्तर्गत स्पॉन्सर थी। मेरा विवाह वली मोहम्मद (कानपुर) के साथ हुआ है। मेरे दो लड़कियाँ हैं, दोनों अभी छोटी-छोटी हैं। मेरे पति साड़ी बनाने वाली फैक्ट्री में काम करते हैं। मैं अपने मायके में अपनी माँ के साथ रहती हूँ। मुझे चाइल्ड फण्ड इण्डिया द्वारा समय-समय पर शिक्षा व स्वास्थ्य हेतु सहायता राशि सहयोग में प्राप्त होती थी। २००६ में चाइल्ड फण्ड इण्डिया द्वारा ५००० की धनराशि प्राप्त हुई। उस धनराशि से मेरी माँ ने १५० अमरूद के पेड़ कौशाम्बी जिले से मंगवाए और खेतों में लगवा दिए, जिनमें से केवल ६५ पेड़ ही तैयार हो पाए। वर्तमान में सभी पेड़ एक बगीचे का रूप ले चुके हैं। अमरूद के पेड़ में साल में दो बार फल लगते हैं। मेरे बगीचे से दूकानदार थोक में अमरूद खरीद लेते हैं, जिससे अमरूद बेचने में किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है। पहली बार के उत्पादन में मेरे परिवार को २५००० हजार से ३०००० हजार रुपये की आमदनी हो जाती है और दूसरी बार के उत्पादन में ५००० हजार से १०००० हजार रुपये की आमदनी ही प्राप्त हो पाती है। क्योंकि दूसरे उत्पादन के समय खेती बारी का काम ज्यादा बढ़ जाता है जिसके कारण अमरूद के बगीचे की ठीक प्रकार से रखवाली नहीं कर पाते हैं जो भी धनराशि मुझे अमरूद बेचने के बाद प्राप्त होती है उससे पूरे परिवार का ठीक-ठीक ढंग से भरण-पोषण हो जाता है। इसके लिए मैं चाइल्ड फण्ड इण्डिया को हृदय से धन्यवाद देती हूँ।

● प्रस्तुति : रोहणी देवी

प्रेरणा

आदिवासी तिजिया ने बदली पति की आदतें तो बदल गये घर के हालात

● लालबहादुर कोल जिस समुदाय से हैं उस समुदाय में गांजा, शराब पीना रोज़मर्रा की ज़िन्दगी का हिस्सा है। लालबहादुर कोल भी नशे का आदी था, जिससे उसके परिवार की आर्थिक हालत बिगड़ती गई। गांजे के नशे में आये दिन पत्नी बच्चों को मारना-पीटना रोज़ की आदत बन गयी थी। बिगड़ैल पति और आठ बेटियों सहित एक बेटे की जिम्मेदारी का बोझ तिजिया के ऊपर था। तिजिया अपने बच्चों के साथ गाँव से ३० किमी० दूर शंकरगढ़ जाकर पत्थर गिट्टी, बालू की तुड़ाई खदानों में काम करने लगी। अपनी मेहनत के बलबूते उसने अपने बच्चों को पाल-पोस कर बड़ा किया और उन्हें शिक्षित भी बनाया। तीन बेटियों की शादी कर वह छोटी बेटियों अन्तिमा, राखी, को अच्छी शिक्षा दिलवाने लगी। समय बीतता गया, तिजिया के पारिवारिक संकट को अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के कार्यकर्ताओं ने जाना, उन्होंने उसे हिम्मत दी। तिजिया ने घर वापसी का मन बनाया। गाँव आकर पति को समझाया। अपनी पथरीली बंजर भूमि में खेती करने का मन बनाया। लालबहादुर के चार बीघे ज़मीन है। तिजिया की इस सोच में संस्था सहायक बनी। लालबहादुर की बिटिया राखी स्पान्सरशिप कार्यक्रम से जुड़ी है। परिवार की स्थिति को देखते हुए संस्थान ने उसे आजीविका संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत कृषि के साथ जोड़ा। उसकी आजीविका सुनिश्चित करने हेतु संस्थान ने प्रशिक्षण दिया। इस माध्यम से उसे कृषि के विषय में जानकारियाँ मिली। इसके बाद तिजिया अपने पति-बच्चों के साथ मिलकर खेत के पत्थरों को तोड़-तोड़कर

फसल बोने योग्य बनाया। अन्ना पशुओं के फसल बचाने के लिए चारो ओर पत्थरों से घेरबाड़ भी किया। परिवार की इस मेहनत को देखते हुए संस्थान ने वर्ष २०१७-१८ में उसे खेतों में गेहूँ, चना, सरसों की खेती करने की प्रेरणा दी। पथरीली बंजर ज़मीन में साल भर के खाने के लिए अनाज पैदा हुआ। अपने खेत के उत्पादन को देखकर पूरा परिवार बहुत खुश हुआ। वर्ष २०१६ में खरीफ फसल में एस०आर०आई० विधि से धान की खेती करायी गयी वह भी रसायन विषमुक्त। इस विधि से धान का कुल उत्पादन २४ कुंटल ५० किग्रा० हुआ। रबी फसल में गेंहूँ, चना, सरसों के साथ-साथ फलदार पौधे लगवाये गये, जिसमें २० पेड़ अमरूद, २० पेड़ करौंदा, २० पेड़ नींबू, २० पेड़ आँवला हैं। ३-५ वर्ष के अन्तराल में सभी पौधे फल देना शुरू कर देंगे। बढ़ते हुए पौधों को देखकर उन्हें बहुत खुशी होती है। जिस खेत में पौधे लगवाये गये हैं उसी खेत के साथ में आलू, प्याज, मटर, धनियाँ, टमाटर, मिर्च बैगन, मेथी की खेती भी करवाई गई। जब तक पौधों का फल देना शुरू नहीं होता तब तक उसमें सब्जियों की खेती भी की जा रही है। लालबहादुर का कहना है कि "मैंने कभी भी ये नहीं सोचा था कि इस पथरीली बंजर ज़मीन में सभी प्रकार की खेती की जा सकती है। प्रतिदिन बाजार से हरी सब्जियाँ खरीद कर खाना हमारे बस की बात नहीं थी। अब हमारे खेतों में बारह महीने कुछ न कुछ सब्जी लगी रहती है। पूरा परिवार हरी सब्जी खाता है। ये हमारे लिए बहुत खुशी की बात है।"

अखिलेश कुमार
क्षेत्रीय समन्वयक-आजीविका चाइल्डफण्ड कार्यक्रम

बंधक पिता को छुड़ा ही लिया 9वीं पास पूजा ने

अनुजा यागिक, अनुदेशक, चाइल्डफण्ड कार्यक्रम

● पूजा चित्रकूट जनपद के मऊ विकासखंड की ग्राम पंचायत कोनिया के आदिवासी मजरा जमिरा कालोनी की कक्षा ६ उत्तीर्ण है। अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान द्वारा संचालित चाइल्डफंड सहायतित 'समेकित बाल विकास परियोजना में स्पान्सर बालिका है। पूजा अपने भाई-बहनों में से अपने आदिवासी माता-पिता की ५वीं सन्तान है। पूजा के पिता जी गाँव में जल संस्थान के बोर-वेल पेयजल योजना में प्राइवेट समरसेबुल आपरेटर रहे। आज से तीन वर्ष पहले जब वे पम्प चालू करके शाम को अपने घर लौट रहे थे तब जंगल से कुछ अज्ञात अपराधी लोग पम्प हाउस पर आये और बिना कुछ बात-चीत किये बगैर ही बुरी तरह मारा-पीटा। तभी से वह अक्सर बीमार रहने लगे। हालात और अधिक बिगड़ने पर जब उन्हें शंकरगढ़ के सद्गुरू अस्पताल में दिखाया गया तब पता चला कि उनके गुर्दे में मवाद बन चुकी है जिसका आपरेशन के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है। पूरे परिवार ने मेहनत-मजदूरी करके पैसा जुटाया। अक्टूबर २०१६ में उनका आपरेशन हुआ। ६५००० रुपए अस्पताल को देना बाकी रह गया था। बाकी रकम ना देने पर सद्गुरू अस्पताल के मालिक ने उन्हें वहीं रोक लिया। अस्पताल से डिस्चार्ज ही नहीं किया।

हाथ जोड़े पूरा परिवार रोता-गिड़गिड़ाता रहा लेकिन अस्पताल के मालिक को कोई रहम नहीं आया। अस्पताल के मालिक ने उसे आने नहीं दिया। पैसा न देने तक अपना काम कराने के लिए बंधक बना लिया। पिता को बंधक तीन माह बीत गये। पूजा को एक दिन पता चला कि संस्थान की वार्षिक समीक्षा बैठक चित्रकूट में ३० दिसम्बर से लेकर १ जनवरी २०२० तक होने वाली है। इसलिए पूजा भी अपने बरगढ़ के कार्यकर्ताओं के साथ चित्रकूट चली आयी। यहाँ पर सभी कार्यकर्ता अपने-अपने गाँव की समस्या लिखकर दे रहे थे जिनसे प्रेरित होकर पूजा ने भी अपनी पूरी समस्या लिखकर दी। पूजा की समस्या को जब देखा गया तो पता चला कि उसके पिता आपरेशन का पैसा ना दे पाने के कारण सद्गुरू अस्पताल द्वारा बन्धक बना लिया गया है। जब कि पूजा ने डॉक्टर को अपने परिवार का स्मार्ट कार्ड भी दिखाया था। डॉक्टर ने यह कहकर स्मार्ट कार्ड लौटा दिया था कि इस कार्ड में मरीज का नाम नहीं है। पूजा के पिता की पूरी कहानी चित्रकूट में मीडिया को बतायी गयी। अमर उजाला के ओम जी ने चित्रकूट के जिलाधिकारी से बात किया। जिलाधिकारी महोदय ने इलाहाबाद के जिलाधिकारी से बात करके पूजा के पिता को अस्पताल से मुक्त करवाया।

अब पूजा के पिता की १३ बीघे ज़मीन दबंगों से मुक्त करवाना बाकी रह गया है। पूजा के पिता की १० बीघे ज़मीन कोटवामाफी में है जहाँ के दबंग उसकी जमीन जबरन जोते हुए हैं। तीन बीघे जमीन जमिरा कालोनी में है। इस ज़मीन पर भी गाँव के दबंग प्रजापति परिवार जबरन जोते हुए हैं। इस प्रकार से नाबालिग छात्रा के एक छोटे से प्रयास ने अपने पिता को अस्पताल

गरीब पिता को अराजकतत्वों ने मारापीटा, पिता के गुर्दे में मवाद बन गयी। बीमार गरीब पिता को पैसे के अभाव के चलते अस्पताल के मालिक ने बंधक बनाया, बेटी ने संस्था के माध्यम से मीडिया को आपबीती बताई, मीडिया ने चित्रकूट के जिलाधिकारी महोदय से वार्ता की, चित्रकूट के जिलाधिकारी महोदय ने प्रयागराज के जिलाधिकारी महोदय को अवगत कराया तब जाकर तीन माह से अस्पताल में बंधक पिता छूट पाया।

पूजा के पिता एवं उनका परिवार

के कहर से बचा लिया। गौरतबल है कि इस क्षेत्र में यह कोई पहला मामला नहीं है। ग़रीबों के साथ यह घिनौना कृत्य हमेशा से होता आया है और आगे भी होता रहेगा। अस्पतालों ने अपने हर क्षेत्र में कुछ दलाल पाल रखे हैं जो ग़रीबों को ले जाकर ऐसे लूट मचाने वाले अस्पतालों में ले जाकर फँसा देते हैं। ग़रीब को दवा के अभाव में अपना सब कुछ बेंचना पड़ जाता है।

मजदूर बना व्यवसायी

मोहित सिंह
क्षेत्रीय समन्वयक
चाइल्डफण्ड आजीविका कार्यक्रम

● ये कहानी है। मऊ ब्लाक के बरगढ़ क्षेत्र में गोइया ग्राम पंचायत के छोटे से मजरा सत्यनारायण नगर में रहने कोल आदिवासी राजनारायण की। राजनारायण अपने परिवार के साथ गाँव में रहते हैं, इनके परिवार में पत्नी सावित्री, एक बेटा, दो बेटियाँ सपना और नेहा हैं। राजनारायण का कहना है कि वह अपनी दोनो बच्चियों को ज्यादा से ज्यादा पढायेंगे। बड़ी बेटी नेहा बी०ए० और छोटी बेटी सपना अभी कक्षा १० में पढ़ रही है, इनके परिवार में कुल ५ सदस्य हैं। वह अपने परिवार का लालन-पालन मजदूरी करके करते थे। इनके पास कुल ज़मीन ३ बीघा है। जहाँ पर सिंचाई का कोई भी साधन उपलब्ध नहीं है। मजदूरी न मिलने पर उसे गाँव से बाहर प्रयागराज में बमरौली काम करने के लिए जाना पड़ता था। उनका कहना है कि लगातार मजदूरी का काम मिलने पर वह पाँच हजार रुपये तक का काम कर लेते थे। अगर काम न मिले तो घर में दो वक़्त की रोटी के लिए भी परेशानी उठानी पड़ती थी। इसके साथ-साथ बेटियों की फीस जमा करने की चिन्ता लगी रहती थी, कि कहीं इनकी पढ़ाई ना रुक जाये। यही हमेशा उनके लिए चिन्ता का विषय बना रहता था। संस्थान के कार्यकर्ताओं को जब यह जानकारी मिली तो वे वहाँ पर पहुँच कर राजनारायण जी से इस विषय पर चर्चा की और संस्थान में चल रहे आजीविका कार्यक्रम के बारे में बताया और उसे दुकान कर लेने की प्रेरणा दी। राजनारायण को किराना की दुकान के लिए अक्टूबर २०१६ में सहयोग किया गया। आज वह अपनी दुकान से १५०-२०० रुपये तक की कमाई कर लेते हैं और अब उन्हें अपने घर से कहीं काम की तलाश में बाहर नहीं जाना पड़ता। आज वह बहुत खुश हैं क्योंकि अब उसे अपने परिवार को चलाने में कोई परेशानी नहीं होती। बच्चों की पढ़ाई को लेकर होने वाली चिन्ता भी खत्म हो गयी। अब वह निरंतर अपनी दुकारन को बढ़ाने के प्रयास में लगे हुए हैं।

राजनारायण का कहना है कि 'आज मैं मजदूरी के कार्य से हटकर दुकान मालिक हूँ। मैंने सोंचा भी नहीं था कि कभी खुद का व्यवसाय चला पाऊँगा। लेकिन संस्थान के सहयोग से आज अपना खुद का व्यवसाय कर रहा हूँ।'

विश्वदीप

प्रवासी भारतीयों के सहयोग से सँवर रहे पाठा के नौनिहाल

आधुनिक युग को डिजिटल का युग कहे तो गलत नहीं होगा, स्वयं को इस युग में पाकर मन आनन्दित होता है, ऐसा युग जहाँ किसी भी प्रकार की जानकारी का प्राप्त होना बहुत ही आसान हो गया है। समाज आज सभी प्रकार के संसाधनों से परिपूर्ण हो रहा है। पुराने रूढ़िवादी युग को पीछे छोड़ सब आगे बहुत ही आगे की ओर दौड़ लगा रहें है। आज हम 'विज्ञान' हो या 'शिक्षा' हर क्षेत्र में अग्रिम हैं, हो रहे हैं। बात शिक्षा की हो तो आज एक बड़ा वर्ग शिक्षित एवं उन्नत है। आज उसने देश ही नहीं अपितु दुनिया में अपने ज्ञान, विज्ञान की समझ में अमिट छाप छोड़ी हैं। आज हमारे देश के विद्वानों द्वारा अपने कार्य-व्यवहार, ज्ञान, विज्ञान से विदेशों में देश का सर गर्व से ऊँचा किया जा रहा है। आज उनमें से अधिकतर लोग वहाँ ही बसे हुऐ हैं और अनवरत इसी कार्य में लगें हैं। यह सब देख कर मन प्रफुल्लित हो उठता है, परन्तु इस बात की पीड़ा भी कहीं न कहीं घर कर जाती है कि आज शिक्षा प्राप्त कर विदेशों में अपना लोहा मनवा रहें हैं। लेकिन एक ऐसा वर्ग जो आज भी शोषित, वंचित एवं शिक्षा से कोसों दूर शिक्षा को निहार रहा है। गुहार लगा रहा है। और पूछ रहा है क्या वहाँ जाकर आप हमको बिसर गये?

शायद यह गुहार उन तक जा पहुँची जो विदेश में रह कर भी समर्थ होकर दीन-दुनिया के लिए भी कुछ करने को लालायित थे। बात उन सब की जिन्होंने विदेश में रहकर अपना भारतीयों का एक संगठन बना रखा है जिसको हम ''उपमा'' (उत्तर प्रदेश मण्डल ऑफ अमेरिका) के नाम से जानते हैं। उनके सहयोग से आज मानिकपुर के पाठा में शिक्षा संस्कार केन्द्र संचालित हैं। इन केन्द्रों में ३ से ६ बर्ष तक बच्चों को संस्कारित एवं शिक्षित करने का कार्य किया जा रहा है। इनकी शुरुआत ३ वर्ष पहले ५ केन्द्रों से की गई थी, आज इन शिक्षा संस्कार केन्द्रों की संख्या १० है जिनमें कोल आदिवासियों एवं अन्य ग़रीब परिवारों के बच्चों के लिए पठन-पाठन का कार्यक्रम संचालित है। इन केन्द्रों में ३४० बच्चों को अक्षर ज्ञान के साथ-साथ संस्कारित करने का भी कार्य किया जाता है। इतना ही नहीं इनको योग एवं खेलकूद के माध्यम से भी शारीरिक एवं मानसिक रूप से सुदृढ़ बनाने का कार्य किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त बच्चों को गायन, नृत्य करा कर लोककला से परिचित कराया जाता है। आज इन केन्द्रों की संख्या एवं इन केन्द्रों में दी जा रही सभी प्रकार की शिक्षा को प्राप्त करने का उत्साह दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है। बच्चों की संख्या लगातार बढ़ने के साथ-साथ परिवारों का पलायन भी रुक रहा है। इस कार्य को अनवरत करने का श्रेय अमेरिका में रह रहे प्रवासी भारतीयों के संगठन के विचारकों को जाता है। उनके द्वारा समय-समय पर केन्द्रों का अवलोकन किया जाता है तथा अन्य आवश्यक जरूरतों को समझ कर पूरा किया जाता है। शिक्षा संस्कार में पंजीकृत अध्ययन कार्य में लगे सभी बच्चों को ठण्ड से बचने के लिए स्वेटर भी प्रदान किये गये, साथ शिक्षा कार्य में उपयुक्त किताबें, कापी एवं अन्य उपयोगी सामग्री के साथ ही बस्ता एवं जूते आदि भी सभी को प्रदान किये गये। ज्ञात है कि आज इन केन्द्रों की संख्या को बढ़ाने का भी विचार संगठन द्वारा किया जा रहा है यह सचमुच एक प्रशंसनीय कार्य एवं मदद है यह कहना किसी भी तरह से गलत नहीं होगा कि आज देश प्रदेश से इतनी दूर होने के बाद भी उपमा के सभी सदस्यों को इस विषय पर निरन्तर चिन्ता है कि संचालित सभी केन्द्र किस प्रकार अनवरत चलायमान रहें।

पाठा के बच्चों के साथ प्रवासी भारतीय श्रीमती मंजू मिश्रा।

कोई तो बताए... दर-ब-दर मुंगलू बसोर परिवार सहित अब कहाँ जाए ?

● मुंगलू बसोर अपने माता-पिता के साथ पहले हेला बगदरी गाँव में रहता था। बड़ा होने पर जब उसकी शादी हुई तो वह खिचरी गाँव चला आया। खिचरी गाँव में बांस की डलिया बनाकर बाजार में बेंचकर अपनी जीविका चला लेता था, लेकिन १९९८ में यहाँ का पूरा जंगल वन्य जीव विभाग को दे दिया गया जिससे इन बसोर परिवारों को बांस लाने में भारी दिक्कत होने लगी।

रोटी का संकट खड़ा होने पर मुंगलू सरहट पंचायत के झरी गाँव चला आया। झरी में सड़क किनारे ग्राम समाज की खाली पड़ी ज़मीन में झोपड़ी बनाकर रहने लगा । पूरा परिवार जीविका हेतु कबाड़ बीनता उसे कबाड़ियो को देकर भोजन का जुगाड़ करने लगा। मुंगलू का यहाँ रहना अगल-बगल के दबंगो को मंजूर नही था। दबंगो ने अपनी ज़मीन बताकर भूमि खाली करने की धमकी दी। मुंगलू ने जब ज़मीन नहीं छोड़ा तो उन्होने उसके ऊपर ग्राम समाज की भूमि पर अवैध कब्जा कर रखने का मुक़दमा दायर कर दिया। मुंगलू मुकदमे में नही जा पाता न कोई वकील लगाया क्योंकि उसके पास मुक़दमा लड़ लेने के पैसे नही हैं। दबंग यदि मुक़दमा जीत गये तो मुंगलू को अपना यह ठिकाना भी छोड़ना पड़ेगा। मुंगलू के ५ बेटे हैं। पाँचो बेटों की शादी हो गयी है। बड़ा बेटा दिल्ली में मजदूरी करता है। ४ बेटे कबाड़ बीनकर अपनी जीविका चलाते हैं। मुंगलू के अब ४ पोतियाँ व २ पोते हैं। इनमें से कोई भी बच्चा स्कूल नहीं जाता। स्कूल जाने पर इनके साथ छुआ-छूत का भेद माना जाता है। मार-पीट कर स्कूल का अन्य काम करवाया जाता है, जिससे इनके बच्चे स्कूल नहीं जाते। बच्चे भी माता-पिता के साथ कबाड़ बीनते है। सरकारी योजना के नाम पर मुंगलू के परिवार में कुछ भी नहीं है। राशन कार्ड ,स्मार्ट कार्ड, आवास, शौचालय एवं उज्ज्वला योजना आदि कुछ भी नहीं है। पानी पीने के लिये ये लोग रेल्वे के तालाब का पानी पीते हैं। लोग इन्हें पानी नहीं भरने देते। हैण्डपम्प आदि छू लेने पर गाली-गलौज किया जाता है। आज़ाद भारत में इस प्रकार मुंगलू बसोर पाठा के हर गाँव में देखने को मिल जायेंगें जिनके पास सरकारी योजना के नाम पर कुछ भी नहीं है। शिक्षा विभाग चाहे जितने दावे करे की शिक्षा से अब कोई वंचित नही होगा। इनके बच्चे आज भी शिक्षा से वंचित है। ये समाज आज भी शोषित है, वंचित है और उपेक्षित है।

सफ़ाक़, अनुदेशक
उपमा कार्यक्रम

स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति जागरुक होती किशोरियाँ

पूनम थामस
क्षेत्रीय पर्यवेक्षक,
अर्श कार्यक्रम

● मऊ-मानिकपुर के पाठा क्षेत्र में परम्परागत रूढ़िवादी प्रथाएं महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति बाधक हैं। किशोरियाँ आज भी पुरानी परम्पराएं ढोने को मजबूर हैं। किशोरावस्था में आते ही, परिवार की बड़ी-बुजुर्ग महिलाएं तमाम बंदिशें लगाना शुरू कर देती हैं जिससे उनके जीवन में होने वाले शारीरिक परिवर्तन के प्रति एक भय बन जाता है और वह असहनीय कष्टों को भी बिना किसी से बताये झेलती रहती हैं। परिणाम यह होता है कि जब तक उनके रोग का पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। ऐसे में किशोरियों का स्वास्थ्य तो खराब होता ही है। साथ में परिवार की आर्थिक क्षति भी होती है। किशोरियों के इलाज में पूरा परिवार हैरान-परेशान हो जाता है। कभी-कभी तो अनियमित माहवारी आपरेशन के मोड़ पर ला खड़ी कर देती है। कुछ एक तो बच जाती हैं कुछ परिवार बसाने के काबिल भी नहीं रह जाती। इसी भयावहता को देखकर किशोरियों के गाँव-गाँव में समूह बनाकर उनके बीच नियमित बैठक कर उनमें होने वाले शारीरिक परिवर्तनों के बारे में चर्चा कर उनके समाधान के बारे में भी बताना प्रारंभ किया। किशोरियों को अपने कार्यालय में परामर्श हेतु बुलाया जहाँ उन्हें सुयोग्य-प्रशिक्षित हमउम्र कार्यकर्ता ने उनकी हर समस्या को सुनकर उनकी परेशानियों का समाधान भी बताया। इलाज के दौरान जहाँ कहीं उन्हें परेशानी आयी उसका तत्काल मौके में जाकर समाधान भी करवाया, जिससे उनके अन्दर का छिपा भय दूर हुआ। उनका आत्मविश्वास जाग उठा। जो किशोरियाँ मुँह खोलने में डरती-हिचकिचाती थीं आज वह २४ गाँव में किशोरियों के २४ समूह बनाकर उनके जीवन में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों के बारे में बताकर उन्हें जागरूक कर कई असाध्य रोगों से बचा रही हैं। परामर्श केन्द्र में आकर आज किशोरियाँ खुलकर अपनी तथा अपने गाँव की अन्य महिलाओं की समस्याएं बताती हैं। अपने परिवार की महिलाओं को भी जागरूक करती हैं। किशोरियों को होने वाली माहवारी में स्वच्छ, साफ, सूती कपड़े या सेनेटरी पैड़ का उपयोग करने एवं उसके उचित निष्पादन के बारे में बताकर प्रशिक्षित किया गया है। निष्पादन में दो तरह की विधियाँ बतायी गई हैं। पहली मटका विधि-इस विधि में मटका लेकर उसमें चारो तरफ छेद करके उपयोग किया गया सेनेटरी पैड डालते जायें। उचित समय पर फिर उसमें आग लगाकर जला दें। दूसरी विधि-गढ्ढा विधि है। इसमें गढ्ढा खोदकर उसे बडे पत्थर से ढंक दे। गढ्ढे में उपयोग किया गया पैड डालती जायें और बाद में आग लगाकर उसका भी निष्पादन कर दें। मऊ ब्लाक के गाँव में २४ डिपो बनाकर प्रत्येक डिपो में ४० सेनेटरी पैड रखवाये गये हैं। गाँव में बने किशोरी समूह की अध्यक्ष उचित दाम पर जरूरतमंद किशोरियों को पैड़ उपलब्ध करवाकर उनका नाम, पता व तिथि भी अपने रजिस्टर में दर्ज करती है ताकि कोई भी उनका रजिस्टर देखकर उनकी पारदर्शिता भाँप सके। पैड़ बेंचने से संकलित धनराशि से पुनः सेनेटरी पैड खरीदकर समूह रख लेता है और यह क्रम उनका हमेशा चलता रहता है। इससे उनमें नेतृत्व का विकास होता ही है साथ में उनके अन्दर प्रबन्धन का कौशल भी विकसित हो रहा है।

अंकिता सिह
शिक्षा अनुदेशक,
चाइल्डफण्ड इण्डिया कार्यक्रम

65 वर्षीय दादी ने तीन बच्चों को पढ़ाने का बीड़ा उठाया

● सपना अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की स्पान्सर बच्ची है। उसके परिवार में कुल ७ सदस्य हैं। सपना, उसकी एक बहन, दो छोटे भाई, माता-पिता और दादी, सभी साथ में रहते हैं। सपना इस समय कस्तूरबा गाँधी जू०हा० कटिया में पढ़ती है। इस वर्ष वह अपने साथ अपनी छोटी बहन को भी ले गई है, जहाँ उन्हें अच्छी शिक्षा के साथ भोजन, कपड़े आदि निशुल्क मिलते हैं। सपना जब कक्षा-५ में पढ़ती थी, तभी उसके पिता मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गये थे। उनके विक्षिप्त होते ही मानो परिवार में पहाड़ टूट पड़ा लेकिन इसी गंभीर परिस्थिति में उसकी दादी माँ संकट के सामने आ डटी। जिन्दगी के बिताये ६५ वर्ष के अनुभव की डोर पकड़कर दादी ने अपने पुराने जेवर बेचें और चूड़ी-बिन्दी आदि की एक छोटी सी दुकान रख ली। दुकान से कुछ आय होने लगी। सपना की माँ को भी कहा कि तुम शर्म त्याग कर जहाँ कहीं मजदूरी मिले करो। बच्चों की देखभाल वह स्वयं कर लेगी। सपना की माँ ने कहा कि सपना की पढ़ाई बन्द करवा दें ताकि वह मजदूरी करने में उसका सहयोग कर सके। दादी माँ को यह मंजूर नहीं था। उसने कहा कि सपना की तुम चिन्ता ना करो उसकी पूरी व्यवस्था वह स्वयं कर लेगी। दादी माँ ने किसी से सुना था कि कस्तूरबा गाँधी जू० हा० में निशुल्क शिक्षा व्यवस्था है। खाना, कपड़ा भी मिलता है। अचानक एक दिन सपना को लिवाकर उसकी दादी छिवलहा गाँव के पास कटिया गाँव में संचालित कस्तूरबा गाँधी विद्यालय पहुँच गई और वहाँ उसे विद्यालय के सुपुर्द कर घर लौट आयी।

एक वर्ष बाद जब सपना छुट्टियों में घर आयी तो उसका रहन-सहन और अच्छी शिक्षा देख माँ खुश हो गई और सपना को कहा कि अपनी छोटी बहन को भी अपने साथ ले जाओ जिससे यह भी कुछ पढ़ ले। सपना ने अपने विद्यालय में बात किया और उसे भी अपने साथ ले गई अब दोनो बहनें एक साथ मिलकर पढ़ रही हैं।

दादी माँ चिन्तित हैं कि एक तो उनके पास स्वयं का घर नहीं है। दूसरे की ज़मीन में झोपड़ी बनाकर रहते हैं। पता नही भूस्वामी उन्हें अपनी ज़मीन से कब निकाल दे, ऐसी हालत में वह सपना को कैसे उच्च शिक्षा दिला पायेगी। सपना के अलावा अभी उसके दो छोटे भाई भी तो हैं, जो प्राथमिक विद्यालय में गाँव पर ही पढ़ रहे हैं। दादी माँ चिन्तित तो है लेकिन अभी हिम्मत नहीं हारी है, उसका कहना है कि अगर वह १० वर्ष तक और जिन्दा रही तो वह अपने सभी पोता, पोतियों को पढ़ा लेगी। उन्हें शिक्षित-संस्कारित कर विकास की मुख्य धारा से जोड़ देंगी।

'हर्र खाय बैशाख जो, बल विद्या अधिकाय
जेठ हर्र खाँसी हरे, संयम सहित जु खाय'

शिवमंगल बाबा
वनौषधि विशेषज्ञ
अ०भा०समाज सेवा संस्थान

आयुर्वेद का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना है। आयुर्वेद कहता है कि यदि हम प्रकृति के नियमों को समझकर उनका पालन करें, तो हम हमेशा स्वस्थ रह सकते हैं। स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए जो उपाय किये जा सकते हैं, उन उपायों को 'प्राकृतिक चिकित्सा' कहते हैं, अर्थात संचित विकारों को निकालने उचित आहार, विहार व व्यवहार के पालन को हम प्राकृतिक चिकित्सा कह सकते हैं तथा संचित मल और दोषों को दूर करने हेतु प्रमाणिक उपाय के रूप में हम इसे अपना सकते हैं। आयुर्वेद शरीर की जीवनी शक्ति को जगाकर आरोग्य प्रदान करती है। प्रकृति के नियमों के अनुसार अच्छी प्रकार संतुलित, नियोजित, नियमित, निर्माणात्मक, संयमित आहार-विहार व व्यवहार का पालन करने से व्यक्ति स्वस्थ्य रहता है।

स्वास्थ्य रक्षक उपाय-

- जीवन को नेक बनाने के लिए प्राकृतिक, सात्विक व सहज प्राप्त अन्न (भोजन) सर्वश्रेष्ठ है।

-समय से सात्विक, संतुलित, सहज भोजन आरोग्य का मंत्र है।

-'जल ही जीवन है' का ज्ञान हो जाय तो शरीर में समता व प्रसन्नता लाने के लिए समुचित जल का सेवन करना उत्तम है।

-शरीर में दृढ़ता व स्फूर्ति लाने के लिए शारीरिक व्यायाम सर्वश्रेष्ठ उपाय है। प्राणायाम सर्वश्रेष्ठ औषधि है। हर्र-बहेड़ा-आँवला जिन्हें 'त्रिफला' कहा जाता है। काया को निरोगी रखने के लिए इनका सेवन आवश्यक है-

हर्र, बहेड़ा, आँवला-घी गुड़ संग जो खाय,
हाथी दाबे काँरव मा, साठ कोस ले जाय।।
हर्र, बहेड़ा, आँवला चौथी-डाल गिलोय,
पंचम जीरा डालकर, निर्मल काया होय।।

हर्र खाने की विधि-

जेठ हर्र खाँसी हरे, संयम सहित जु खाय,
मास अषाढ़ जु खाय यही, पेट साफ ह्वै जाय।
सावन बाढ़ै ज्योति दृग, भादौं ताकत होय,
क्वार बाल काले करै, कार्तिक सब रोग खोय।
अगहन मास नपुंसक, मर्द अवश्य होय जाय,
पूस मास जो खावई, बल बाढ़े नरियाय।
माघ मास बुद्धि बढ़े, फागुन दीठ दृढ़ाय,
चैत मास श्रुतिधर बनें, यामें संसय नाय।
हर्र खाय बैसाख जो, बल विद्या अधिकाय,
माताराम हर्र जगत में, रक्षक सदा दिखाय।।

सनाय खाने की विधि-

नौ मासा पर मान ले, पाती साफ कुटाय,
खाय शहद के साथ जो, फाँके नित्य सनाय।
सम शक्कर के साथ जो, फाँके नित्य सनाय,
हृदय शूल का नाश हो, सब सुस्ती मिट जाय।
गुदकंद माही मिलाय के, जो सनाय को खाय,
सर्दी तन की नाश हो, भूँख अधिक होइ जाय।
मिश्री संग मेलि के, नित्य प्रति जो खाय,
बल बढ़े तम में अधिक, कमजोरी मिट जाय।
गो घृत मेली सनाय जो खावै नित धरि ध्यान,
तन की पीड़ा सब मिटै, सदा होय कल्यान।
दधि मिलाय जो खाय यहि, अद्भुत गुण दिखलाय,
विष को हरे प्रभाव सब-प्रणाली लेय बचाय।
चोप चिनी के साथ जो, चालीस दिन यहि खाय,
बढ़े रोशनी आँख की, मन आनंद दरसाय।
गाय, दूध के साथ फाँके नित्य सनाय
रक्त नया तन में बढे, दूषित जाय नसाय।
अजया दूध के साथ में, खावे नित्य सनाय,
ज्योति बढ़े तन में सदा, अधिक न सुखाय।

महुई में हुए जल संचयन के अनूठे प्रयास

●गाँव महुई जिसकी आबादी लगभग १४५४ है। यहाँ के लोग कृषि एवं मजदूरी पर निर्भर है। इस गाँव का कुल क्षेत्रफल १३००.२५ हे० तथा शिक्षा ५६ प्रतिशत है।

ग्राम पंचायत की महिला प्रधान श्रीमती सुमित्रा देवी २०१५ में प्रधान बनी। अनुसूचित जाति की महिला होने के नाते चाह कर भी कुछ करने में असमर्थ रही। जैसे तैसे एक वर्ष अपनी प्रधानी का कार्यकाल बीता, कि अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान, चित्रकूट 'वाश परियोजना' कार्यक्रम वाटरएड के सहयोग से बाँदा जिले की तिन्दवारी ब्लाक की १६ ग्राम पंचायतों में विस्तार किया। जिसमें महुई गाँव भी शामिल था। संस्थान कार्यकर्ता सदाशिव पहली बार ग्राम पंचायत महुई में जल चौपाल के गठन हेतु पहुँचे। बैठक ग्राम प्रधान सुमित्रा देवी की उपस्थिति में ग्रामीणों के साथ आयोजित की। जिसमें एक सैकड़ा जन समुदाय उपस्थित रहा। 'जल चौपाल' का अध्यक्ष श्री मलखे श्रीवास जी को सर्वसम्मति से चुना गया, और सबने संस्थान के मार्गदर्शन एवं परियोजना की मंशा के अनुसार गाँव में कार्य करने का संकल्प लिया। प्रधान श्रीमती सुमित्रा देवी ने भी प्रेरित होकर प्रत्येक कार्यक्रमों, गतिविधियों में शामिल होकर विकास की बागडोर संभाल ली। परियोजना की संचालित गतिविधियों में जल सुरक्षा स्वच्छता पर अपना कार्य शुरू किया, समय-समय पर समुदाय से बातचीत करना, प्रेरित करना, गाँव तथा मुहल्लेवार बैठक करना सुमित्रा देवी का स्वभाव बन गया। वर्ष २०१८-१६ के कार्यक्रमों में वर्षा जल संचयन इकाई मॉडल, वाटरएड के द्वारा ग्राम प्रधान के साथ चर्चा की गई। जल चौपाल बैठक में इस मॉडल पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गयी, लेकिन समुदाय को भरोसा नहीं हुआ। सुमित्रा देवी प्रेरित हुई और उन्होने इस मॉडल की स्वयं अपने घर से शुरुआत की।

सदाशिव
ब्लाक समन्वयक, वाटरएड़

३०x५० फिट की छत का पानी दरबाजे के सामने स्थापित सूखे कुएँ में डाल दिया जिससे एक तरफ वर्षा का पानी बेकार न बहे, कुएँ में जाये, वहीं दूसरी तरफ बगल में लगे हैण्डपम्प के वाटर लेवल को बनाये रखने में सहायक हो सके। वर्षा जल संचयन की इकाई का कार्य संस्थान एवं ग्राम पंचायत के सहयोग से पूर्ण हुआ। जबकि रूढ़वादी प्रथाओं के चलते उस महिला प्रधान सुमित्रा देवी को तमाम गाँव के लोगों के ताने भी सुनने को मिले यथा एक सार्वजनिक कुएँ में धोबी जाति के घर का पानी डाल दिया है, अब तो इस कूप का पानी पीने योग्य भी नहीं रहा, लेकिन महिला प्रधान सुमित्रा व मलखे जी अपने सपनों को साकार करने में हार नहीं मानी और लगातार अच्छे कार्य में लगे रहे।

गाँव महुई में श्याम सिंह के कुआँ सहित ५ कुओं में वर्षा जल संचयन की संरचना तैयार की गयी। प्राथमिक विद्यालय की पाँच छतों का पानी संस्थान के सहयोग से रिचार्ज पिट १० x०८ x०५ फिट में डाला गया। इन इकाईयों को स्थापित करने में जहाँ संस्थान द्वारा कम लागत में तैयार करने की योजना थी, वहीं पर सुमित्रा देवी अपनी ग्राम पंचायत की धनराशि से सहयोग करते हुए अच्छा मॉडल तैयार करने में सक्रिय भूमिका निभाई । वर्षा जल संचयन की स्थापित इकाईयाँ मॉडल बनकर उभरी तो प्रधान द्वारा ४ कुओं में अपनी ग्राम पंचायत के बजट से स्वयं वर्षा जल संचयन की इकाई स्थापित कराई गई । सुखद परिणाम अब देखने को मिला है, कि एक सूखे कुएं में अपने आप पानी भर गया है। 'कुआँ तालाब जियाओ अभियान' जिला प्रशासन की पहल पर सुमित्रा प्रधान द्वारा जल स्रोतों के पास ट्रेन्च खुदाई कार्य, २००० वृक्षारोपण, तालाब की खुदाई व कुओं की साफ सफाई विधिवत तरीके से करायी है।

मुस्कान

सा'ब, बच्चों को सँभाल रहा था

गिजुभाई

●

बादशाह और बीरबल बैठे हुए थे।

बादशाह ने कहा : "बीरबल, आज तुम कचहरी में देरी से क्यों आए?"

बीरबल ने कहा : "सा'ब, क्या करूँ ? बच्चों की देखभाल कर रहा था।"

बादशाह ने कहा : "परन्तु इसमें इतनी देरी होने का क्या कारण है ?"

बीरबल ने कहा : "सा'ब, बच्चों की देखभाल करना बहुत मुश्किल काम है।"

बादशाह ने कहा : "अरे ! बच्चों की देखभाल करने में कौन बड़ी बात है ? उन्हें पाई-पैसा दे दो, सेव-मुरमुरा खिला दो, उनका रोना-धोना बन्द !"

बीरबल ने कहा : "सा'ब ! अनुभव कर लीजिएगा, फिर मालूम हो जाएगा।"

बादशाह ने कहा : "ऐसी बेपेंदी की बात में, अनुभव करने का क्या है?"

बीरबल ने कहा : "तो लीजिए, मैं आपका बेटा बनता हूँ, आप मेरी देखभाल कीजिएगा !"

बादशाह ने कहा : "ठीक है। चलो, मैं बाप बनता हूँ, और तुम बेटे बन जाओ।"

बीरबल ने शुरू किया : "अें-अें-अें ! पिताजी, मुझे दूध पीना है।"

बादशाह ने कहा : "सुनो ? दूध लाओ।"

दूध आया। बीरबल ने पिया।

"अें-अें-अें...! पिता जी, मुझे कन्धों पर बैठना है!"

"अरे ! क्या बादशाह के कन्धों पर बैठा जाता है ?"

"क्यों नहीं ? बादशाह को बेटा जो हूँ !"

बादशाह ने बीरबल को कन्धों पर बिठाया और फिर नीचे उतारा।

"अें-अें-अें ! पिताजी, मुझे गन्ना खाना है !"

बादशाह ने गन्ना मँगवाया।

"अें-अें-अें ! पिताजी, इसके टुकड़े कर दीजिए।"

बादशाह ने टुकड़े कर दिए।

"अें-अें-अें ! नहीं पिताजी, टुकड़ों को पूरा गन्ना बना दीजिए।"

"अरे सुन! टुकड़ों से पूरा गन्ना कैसे बन सकता है ?"

बीरबल रोने लगा : "अें-अें-अें...! टुकड़े नहीं चाहिए, मुझे पूरा गन्ना चाहिए...अें-अें-अें...!"

"चल-चल ! चुपचाप गन्ना खा ।"

"नहीं पिताजी ! हमारा गन्ना लाओ !"

"अरे कोई सुनो ! एक और गन्ना लाओ !"

"नहीं-नहीं ! इन्हीं टुकड़ों का पूरा गन्ना बना दो, पिताजी ! दूसरा नहीं चाहिए।

बादशाह ने कहा : "नादानी मत करो !"

बीरबल ने कहा : " नहीं-नहीं-नहीं ! हमारे इन्हीं टुकड़ों का गन्ना बनाकर दो ! अें-अें-अें !"

बादशाह ने कहा : यह माथापच्ची कौन करेगा ? अरे है कोई ? इस लड़के को बाहर ले जाओ ।"

बीरबल हँसने लगा।

बादशाह ने कहा : "बीरबल तुम सच कहते हो, बच्चों को सँभालना मुश्किल तो है !"

साभार : 'खड़बड़ खड़बड़' पुस्तक से साभार

चाइल्डफण्ड इण्डिया कार्यक्रम की प्रेरणा से स्पांसर बच्चें के अभिभावकों ने सुपोषण हेतु तैयार किये किचन गार्ड़न एवं उन्नत फसलें।

मीडिया की नज़र

स्टार समाचार

पाठा क्षेत्र में शिक्षा की जोत जला रही उपमा संस्था

सहारा

मूलभूत समस्याओं से जूझ रहे पाठावासी

महिलाओं की समस्याएं दूर करेंगी सह मित्र

हिन्दुस्तान

महिलाओं की समस्याएं दूर करेंगी सह मित्र

बाल महोत्सव में बच्चों और अभिभावकों को दी गई सीख

हिन्दुस्तान

पौष्टिक आहार से सुधरती सेहत

आज

सहारा

सब्जी उत्पादन सीमान्त किसानों के लिए फायदेमंद

फल-फूल, पेड़-पौधों के साथ पशु पक्षियों के चित्रों में दिखाई प्रतिभा

ग्राम पंचायत सरहट, मानिकपुर में 'आपदा जोखिम समावेशित विकास कार्ययोजना निर्माण' सम्बन्धी टास्क फोर्स एवं समुदाय को प्रशिक्षण देते हुए श्री मनोज सिंह, यूनीसेफ, लखनऊ।

आजीविका संवर्धन हेतु राजगीर मिस्त्रियों को प्रशिक्षित करते हुए तकनीकी विशेषज्ञ श्री विजय सिंह।

व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करते हुए युवा राजगीर ।

बुक-पोस्ट

सेवा में,

....

....

....

....

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान,

भारत जननी परिसर, रानीपुर भट्ट, पोस्ट-सीतापुर,

चित्रकूट -210204 (उ0प्र0)

दूरभाष : 9415310662,

E-mail : absssckt@gmail.com, absssсso@gmail.com,

Website : absss.in

सहयोग ChildFund India